CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH-9

|| the gurukul ||

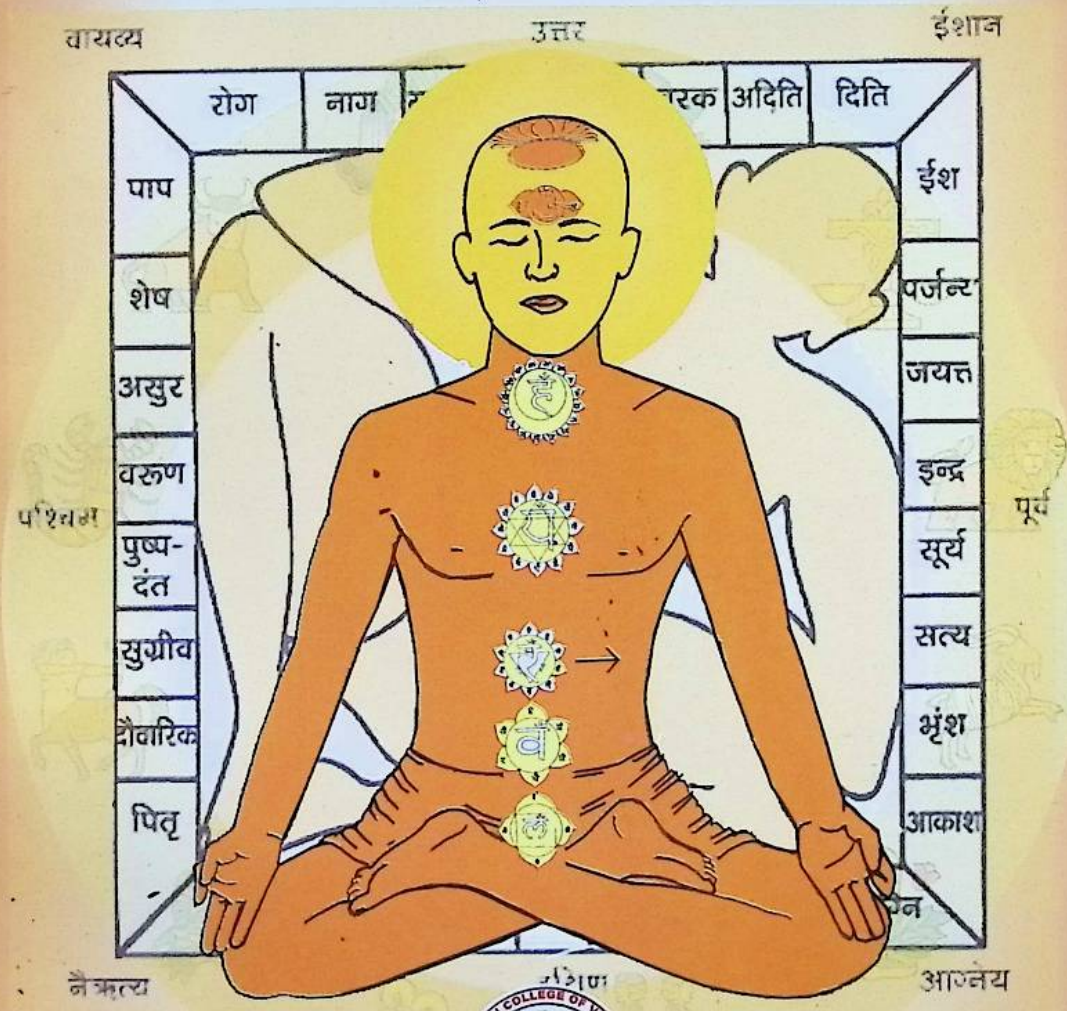

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 9

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	भाग्य रेखा	3–51
अध्याय 2	:	सूर्य रेखा	52–100

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्य रेखा

भाग्य कर्मो से बंधा हुआ है। इसे कर्मो से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। यह जरूर है कि कई मनुष्यों को कम कर्मो के बाद भी वैभव, धन्य–धान्य व शांति पूर्वक जीवन प्राप्त है। यही भाग्य कहलाता है जबकि एक व्यक्ति अत्यधिक कर्मो के बाद भी इस सुख व वैभव को प्राप्त नहीं कर पाता है। इसी बिंदु पर भाग्य की शुरूआत होती है।

मानव के हाथ में इस रेखा की उत्पत्ति से ज्ञात किया जा सकता है। भाग्य रेखा को, शनि रेखा, प्रारब्ध रेखा, भविष्य जानने वाली रेखा, उर्ध्व रेखा, राज्य रेखा कई नामों से जाना जाता है। यह एक उर्ध्व गामी रेखा है तथा मानव सांसारिक जीवन में सफलता प्राप्त करेगा, कौन सा क्षेत्र या व्यवसाय उसे सफलता प्रदान कर सकता है, उसके जीवन में आने वाले शुभ या अशुभ प्रसंग किस उम्र में प्राप्त हो सकते है तथा समस्त जीवन का सार इस रेखा में समाहित रहता है।

भाग्य रेखा के होने के बावजूद भी हाथ की बनावट भी इस रेखा की उपस्थिति को कम या ज्यादा प्रभावी बना सकती है क्योंकि कुछ लोग भाग्य पर विश्वास करते है। कई लोग कम विश्वास करते है। कुछ लोग दोनों कर्म व भाग्य पर विश्वास करते है। परन्तु निसंदेह भाग्य उन्हीं का साथ अधिक देता है जो कर्म पर विश्वास करते है अर्थात् ऐसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाथ में छोटी भाग्य रेखा हो एवं वह कर्म भी अधिक करे तो निसंदेह यह बड़ी भाग्य रेखा वाले से ज्यादा उपलब्धियाँ प्राप्त करते है।

हाथ की बनावट भी भाग्य रेखा की उपलब्धियों पर प्रभाव रखती है। अतः हाथों की बनावट का ध्यान रखकर फलित प्राप्त होता है। वर्गाकार व चमासाकार हाथों की छोटी रेखा दार्शनिक हाथों की बड़ी भाग्य रेखा से ज्यादा उपलब्धियां रखती है। अतः जातक के भाग्य का अनुमान ज्ञात करने के पहले हाथ की बनावट का ध्यान रखना चाहिये।

जैसा की समस्त प्रमुख रेखाओं को एक सुव्यवस्थित रूप में क्रमबद्ध अध्ययन छोटी से छोटी दृष्टिकोण से करने के बाद जातक के भविष्य के बारे में पूर्णता प्राप्त कर सकते है। अतः इसका क्रमबद्ध अध्ययन निम्न है।

वर्गाकार व चमासाकार हाथ

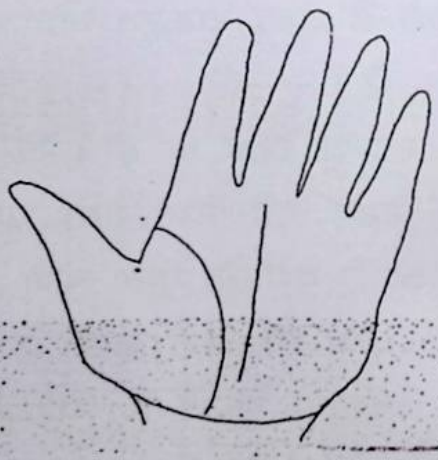

दार्शनिक हाथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. भाग्य रेखा का प्रारंभ स्थल
2. भाग्य रेखा का समापन स्थल
3. भाग्य रेखा तथा ग्रह प्रदेश
4. भाग्य रेखा का स्वरूप व गुण दोष
5. भाग्य रेखा का अन्य मुख्य रेखाओं से संबंध
6. भाग्य रेखा व प्रभावी रेखाएं
7. भाग्य रेखा व चिन्ह

1. भाग्य रेखा का प्रारंभ स्थल

किसी भी रेखा के उद्‌गम स्थान या प्रारंभ स्थान का महत्व होता है वह उस क्षेत्र के गुण या दोष उसके गुणों व अवगुणों का इजाफा करते है। हथेली में इसके प्रारंभ स्थल का क्षेत्र बड़ा व्यापक है अतः इसका क्रमबद्ध अध्ययन निम्न है।

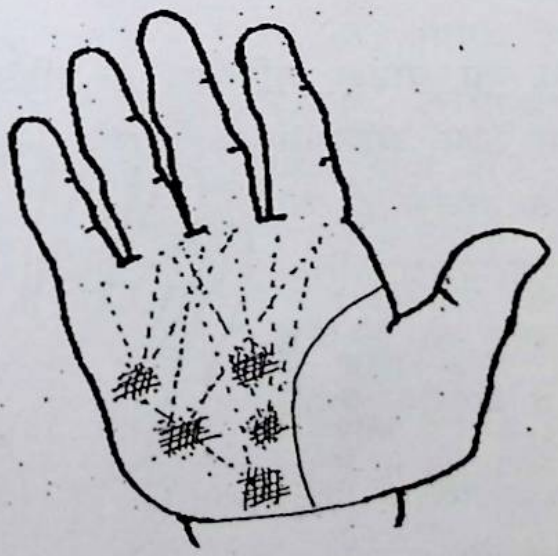

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. भाग्य रेखा का प्रारंभ मणिबंध से

जब जातक की हथेली में मणिबंध क्षेत्र से प्रारंभ होकर भाग्य रेखा शनि क्षेत्र तक पहुँचे तो यह जातक के लिये अत्यंत सौभाग्य कारक है। ऐसी रेखा का स्वामी उच्च कुल, धनवान तथा प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेता है। अतः जातक की बचपन व किशोर अवस्था में उसे सभी सुख व वैभव प्राप्त होते है।

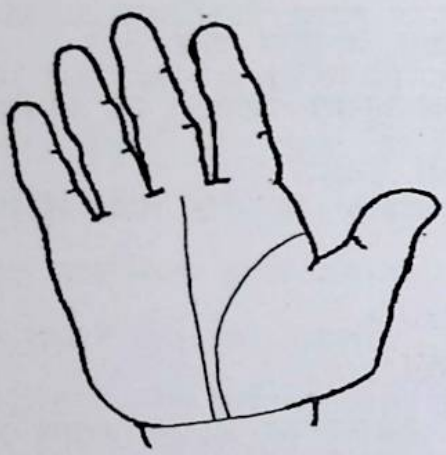

अच्छे संस्कारों वाले पारिवारिक परिवेश में उसका लालन–पालन होने से, दृढ़ इच्छा शक्ति व कर्मो से जीवन व्यापन करने से वह यशस्वी जीवन का स्वामी होता है।

2. भाग्य रेखा का प्रारंभ मणिबंध के तीसरे पर्व से

जब भाग्य रेखा मणिबंध के तीसरे पर्व से आरंभ हो तो यह अशुभ है। जातक प्राकृतिक विपदा का शिकार हो सकता है। पारिवारिक व आर्थिक कष्टों से जीवन दुःखमय रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. भाग्य रेखा का प्रारंभ शुक्र पर्वत से

जातक की भाग्य रेखा का आरंभ शुक्र पर्वत क्षेत्र से हो शनि पर्वत तक पहुँचे तब जातक का बचपन व किशोर अवस्था परिवार के लोगों द्वारा संचालित होती है। स्वेच्छा से निर्णय या कार्य न करने से आत्म विश्वास कम होता है। जातक का व्यक्तित्व उभर नहीं पाता है। जीवन भर दूसरों पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति दुःख का निर्माण करती है। परन्तु ऐसें जातक शुक्र क्षेत्र की विशेषताओं से परिपूर्ण सौंदर्य दृष्टि वाले, अच्छे साहित्यकार व कला के पारखी होते हुए समाज में सम्मान व जगह प्राप्त कर सकते है।

4. भाग्य रेखा का प्रारंभ प्रथम मणिबंध के ऊपर मध्य क्षेत्र से

जब हथेली के अन्तिम छोर प्रथम मणिबंध के ऊपर से प्रारंभ हो शनि क्षेत्र तक पहुँचे तो सौभाग्य सूचक है। ऐसे जातक अपना रास्ता स्वयं निर्मित करते है। कठोर परिश्रमी तथा उच्च

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकांक्षा वाले होने से सफलता के शिखर तक पहुँच जाते है। इस तरह की रेखा स्त्री में होने पर स्त्री स्वावलंबी तथा उच्च पद पर कुशल प्रशासनिक अधिकारी, परन्तु जीवनभर अविवाहित रहती है।

5. मणिबंध पर जीवन रेखा के साथ मिलती हुई भाग्य रेखा

यदि मणिबंध पर जीवन रेखा के साथ भाग्य रेखा मिले तो जातक का व्यक्तित्व पूर्ण रूप से दूसरे पर आश्रित रहता है। और यह जीवन रेखा के स्वतंत्र होने से जातक स्वतंत्र हो जायेगा तथा स्वंतत्र कार्य व कर्म से संघर्ष के बाद सफलता के मुकाम तक पहुँचेगा।

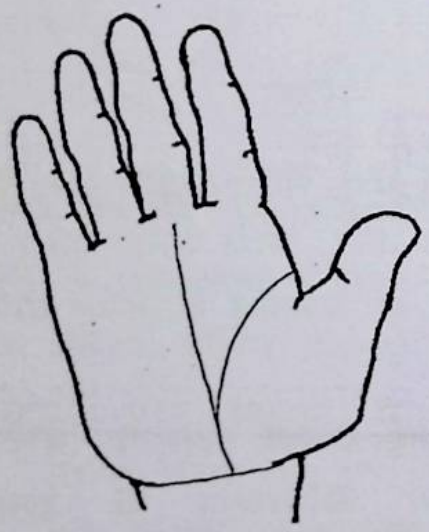

6. जीवन रेखा पर मध्य स्थान पर मिलकर निकलती हुई भाग्य रेखा

जातक का बचपन व किशोर अवस्था दूसरों अथवा परिवार या अन्य लोगों पर आश्रित रहता है। परंतु जहाँ से भाग्य रेखा व आयु रेखा स्वतंत्र होती है वहां से जातक का मुख्य संघर्ष चालु होता है तथा सफलता प्राप्त होती है। सही मायने में आयु की गणना के हिसाब से जातक का स्वतंत्र व्यक्तित्व व भाग्योदय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

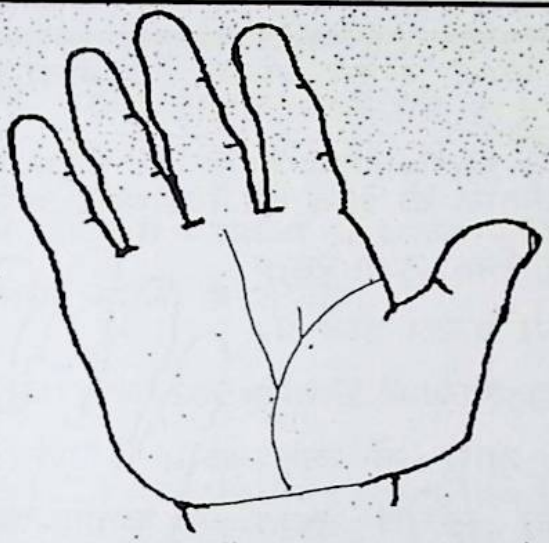

7. चंद्र क्षेत्र से प्रारंभ होने वाली भाग्य रेखा

चंद्र क्षेत्र, अस्थिर भाव, चंचल तथा कला प्रेमीयों का क्षेत्र तथा जातक में भी अस्थिरता, चंचलता उत्पन्न करता है। यहां से आरंभ होने वाली भाग्य रेखा वाले जातक अस्थिर स्वभाव के व चंचल प्रवृत्ति होने से अशांत रहते है। मन चंचल होने से सभी कार्यो को मन लगाकर नहीं करते अतः इन्हें प्रोत्साहन व दूसरों का सहयोग जरूरी होता है। परन्तु कला प्रेमी होने से समाज में स्थान बना लेते है। कलाकार सामाजिक कार्यकर्ता या राजनितिज्ञ हो ख्याति प्राप्त करते है। काल्पनिक होने से देश–विदेश की यात्रा करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. हथेली के मध्य स्थान मंगल के मैदान से निकलने वाली भाग्य रेखा

मंगल के मैदान के भाव की विशेषता अस्थिरता है। जब तक भाग्य उदय रूका हुआ रहता है। इस स्थान से प्रारंभ होने पर भाग्य में बदलाव आता है अर्थात् जातक अपनी आयु में मध्य तीस वर्ष कड़े संघर्ष तथा अस्थिरता से व्यतीत कर चुका होता है। परन्तु इसके बाद भाग्य अपनी करवट बदल स्थिरता तथा कम संघर्ष कर पूर्ण जीवन व्यतीत करवाता है तथा मस्तिष्क में स्थिरता उत्पन्न होती हैं।

9. उच्च व निम्न मंगल क्षेत्र से प्रारंभ होने वाली भाग्य रेखा

दोनों ही मंगल क्षेत्र उग्रता, आक्रमकता तथा हिसंकता लिये हुये है और भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर पहुँचती है। स्वभावत शनि व मंगल में भी बैर है अतः ऐसी भाग्य रेखा अशुभ कारक है तथा जातक मे उग्रता क्रोध उत्पन्न कर हानि पहुँचाती है। साथ ही दुर्घटनाओं का योग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी बनाती है। ऐसा जातक कठिनाईयों से जुड़ता हुआ जीवन संघर्ष करता है परन्तु भाग्य रेखा की सहायक रेखाएं इन मंगल क्षेत्र पर पहुँचे तब गुणों में चार चांद लग जाते है तथा मंगल क्षेत्र की शक्तियां पराक्रम व भाग्य वृद्धि में लग जाती है तथा सफलता प्रदान करती है।

10. भाग्य रेखा का प्रारंभ मस्तिष्क रेखा से

मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ होने वाली भाग्य रेखा जातक के बौद्धिक भाव से मिलने वाली सफलता दर्शाती है। जातक का प्रारंभिक जीवन संघर्षपुर्ण, परिश्रमी होता है। प्रायः देरी से संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करने वाले जातक इस श्रेणी में आते है। राजनितीज्ञ, पत्रकार, साहित्यकार, कुशल कारीगर व चित्रकार प्रायः इस श्रेणी में आते है।

11. हृदय रेखा से प्रारंभ होने वाली भाग्य रेखा

भाग्य रेखा हृदय रेखा से प्रारंभ हो तब जातक का भाग्य उदय उम्र के अन्तिम चरण में होता है। इसके पहले उसे काफी संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है। अर्थात् उसके गुणों व योग्यतओं को बहुत देरी के बाद सराहना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त होती है।

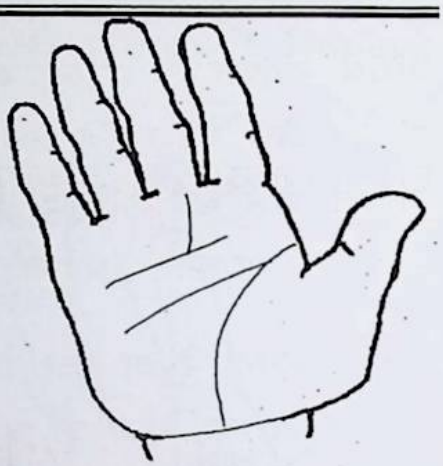

2. भाग्य रेखा तथा समापन स्थल

जैसा की हम जानते है कि रेखा का प्रारंभ व समापन स्थल जातक के गुणों व अवगुणों का उत्तरदायी होता है। अब हम समापन स्थल के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

1. मणिबंध से गुरू पर्वत तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा

जब भाग्य रेखा मणिबंध अथवा चंद्र क्षेत्र से प्रारंभ हो गुरू पर्वत तक पहुँचे तब जातक अत्यंत सौभाग्यशाली तथा कई गरिमामय पद अथवा सत्ता के अधिकारों का स्वामी होता है। उसका विवाह उच्च कुल में हो मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

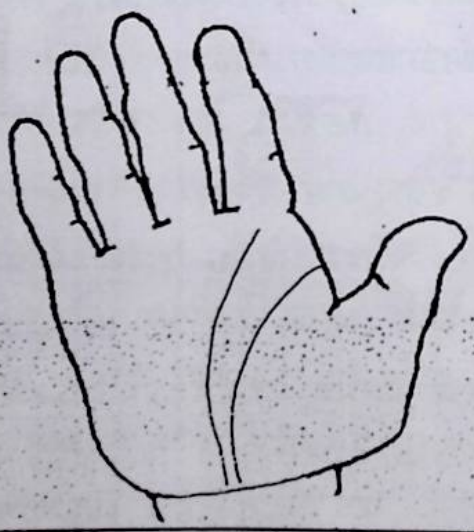

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. मणिबंध या चंद्र पर्वत से गुरू पर्वत पर पहुँच त्रिशुल आकृति बनाये

गुरू पर्वत पर भाग्य रेखा का पहुँचना सौभाग्य सूचक होता है। यहां पहुँच यह त्रिशुल आकृति बनाये तब जातक के भाग्य में चार चांद लग जाते है। जातक राज सत्ता प्राप्त कर राज सुख भोगता है। उसके परिवार व कुल की प्रतिष्ठा होती है। भौतिक व आध्यात्मिक सुखों का अम्बार रहता है तथा सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है।

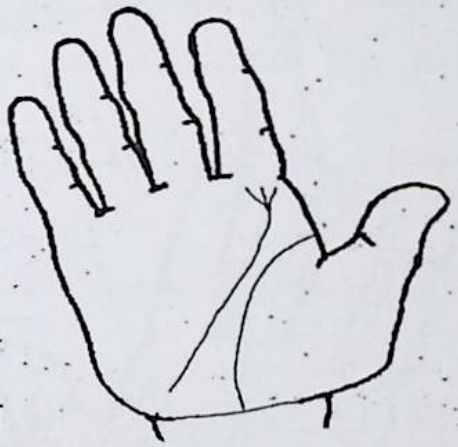

3. मणिबंध से मिलकर शनि क्षेत्र पर समाप्त हो

सामान्यतया भाग्य रेखा की उत्पत्ति चंद्र क्षेत्र अथवा मणिबंध से प्रारंभ हो शनि क्षेत्र पर समाप्त होती है। यह स्थिति जातक के लिये सौभाग्यकारी तथा सभी क्षेत्रों में जातक को सफलता प्रदान करती है। यह रेखा आगे तक सफलता प्रदान करती है। परन्तु यह रेखा आगे तक मध यमा के प्रथम पर्व को पार करे तब यह अशुभता प्रदान करती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यही रेखा ऊपर न जाकर गुरू पर्वत पर मुड़ जावे तब यह शुभ फल प्रदान करती है तथा जातक उच्च अध्ययन कर बड़ें पद पर आसीन होता है तथा अधिकार प्राप्त कर सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है।

4. भाग्य रेखा का समापन–सूर्य पर्वत क्षेत्र पर हो

जब भाग्य रेखा का समापन सूर्य क्षेत्र पर हो तो वह रेखा सूर्य रेखा ही कहलायेगी तथा जातक पराक्रमी, ज्ञानी, अच्छा नेता, कलाकार, साहित्यकार होता है। वह अपने जीवन में उच्च स्थान पर पहुँचता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. भाग्य रेखा का समापन बुध पर्वत पर हो

भाग्य रेखा जिस पर्वत क्षेत्र पर पहुँचती है वहां के गुणों का समावेश हो जाता है। यदि बुध क्षेत्र पर पहुँचे तब जातक अच्छा व्यापारी, वैज्ञानिक, वाक्पटुता वाला हों इन्हीं क्षेत्रों में उन्नति कर सर्वोच्च स्थान तक पहुँचता है। जातक मृदु स्वभाव वाले, व्यवहारिक तथा समाज में लोकप्रिय होते है।

6. भाग्य रेखा का समापन उच्च मंगल क्षेत्र में हो

भाग्य रेखा का समापन उच्च मंगल क्षेत्र पर होना जातक को निड़र व हिसंक बनाता है। वह अपने उद्देश्यों के लिये हिंसा का मार्ग भी अपना लेता है और उद्देश्य पूर्ण करता है। वह नेतृत्व में आगे तथा संगठन चलाने वाला होता है। प्रायः आतंकवादी, ड्रॉन, इस तरह की विषमताएं रखते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. भाग्य रेखा हृदय रेखा पर रूके

जब भाग्य रेखा हृदय रेखा के आगे न जाकर हृदय रेखा पर समाप्त हो तब जातक की भावनाएं व प्रेम संबंध संवेदना व भावुकता में नष्ट हो जाते है तथा जातक असफलत प्रेमी होता है। जातक जीवन भर कष्टमय जीवन व्यतीत करता है।

8. भाग्य रेखा हृदय रेखा से मिलकर गुरू पर्वत तक पहुँचे

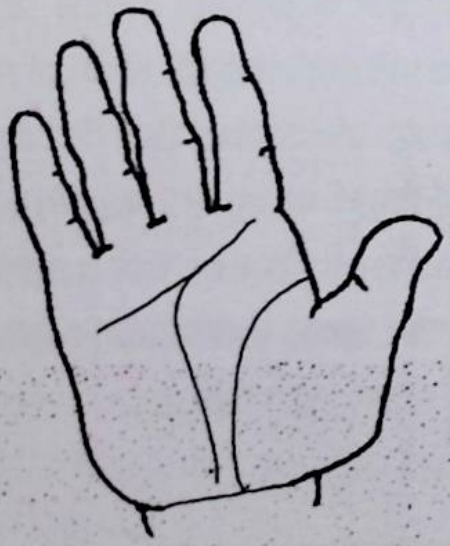

ऐसी स्थिती में जातक प्रेम संबंधों से अपने लक्ष्य को पूर्ण करता है। उसका संबंध उच्च वर्ग से होता है तथा वह मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति करता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. भाग्य रेखा का अंत मस्तिष्क रेखा पर

जब भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा पर पहुँच खत्म हो जाये तब जातक अल्प बुद्धि वाला, शीघ्र आवेश में आने वाला, बिना सोचे समझे हर कार्य में हाथ ड़ालने वाला होता है। अपने स्वभाव के कारण जातक असफलताएं प्राप्त करता है।

10. भाग्य रेखा का अंत मस्तिष्क रेखा पर दो शाखाओं में होना

जब मस्तिष्क रेखा दो शाखा में विभाजित होकर अन्त हो तब जातक अचानक दुर्घटना या आकस्मिक आघात के कारण असफलताएं प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा पर पहुँच चंद्र पर्वत पर लौटे

जब भाग्य रेखा चंद्र पर्वत पर मुड़कर लौटे तब जातक संवैधानिक या अनैतिक कार्यो में फंसकर कारावास भोगता है। यह अशुभता प्रकट करती है।

3. भाग्य रेखा तथा पर्वत क्षेत्र

भाग्य रेखा व पर्वत क्षेत्र के संबंध में पर्वत क्षेत्रों के गुण व अवगुण फलित में समाहित होते है अर्थात यदि इन क्षेत्रों से भाग्य रेखा का उदय हो अथवा समापन। इन क्षेत्रों के गुणों को सौभाग्य वर्धक अथवा दूगुर्ण अशुभता प्रदान करता है। जिनका जिक्र हमने इस रेखा के प्रारंभ स्थल व समापन स्थल में विस्तृत रूप में देखा है। फिर भी पर्वत क्षेत्रों की व्याख्या करना जरूरी है।

1. गुरू पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाली भाग्य रेखा

गुरू क्षेत्र उच्च आकांक्षाओं, प्रेम संबंधों में उच्च घरानों से संबंध, विद्याशील, नेतृत्व की क्षमताओं, हठी स्वभाव, आदर्शवादी, रूढ़िवादी गतिविधियों के उत्तरदायी है तथा जातक को उत्तम स्वास्थय सम्पन्न जीवन व सफल जिन्दगी प्रदान करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शनि पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाली भाग्य रेखा

प्रायः भाग्य रेखा का समापन स्थल शनि क्षेत्र ही होता है परन्तु यह क्षेत्र, विशेषता, धीरता, संयम वाला क्षेत्र है। इन्हीं गुणों का समावेश होने से जातक, उद्यमी, परिश्रमी होने से अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सम्पन्न जीवन यापन करता है।

3. सूर्य पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाली भाग्य रेखा

सूर्य क्षेत्र पराक्रम तथा बुद्धि का समाहित रूप है परन्तु यह जातक में दिखावे, तथा घमंड़ में वृद्धि भी करता है। ऐसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक प्रायः सेनानायक पुलिस या खेलकूद में महारत हासिल करते है। भाग्य रेख का सहयोग इनके व्यक्तित में चार चांद लगा देता है।

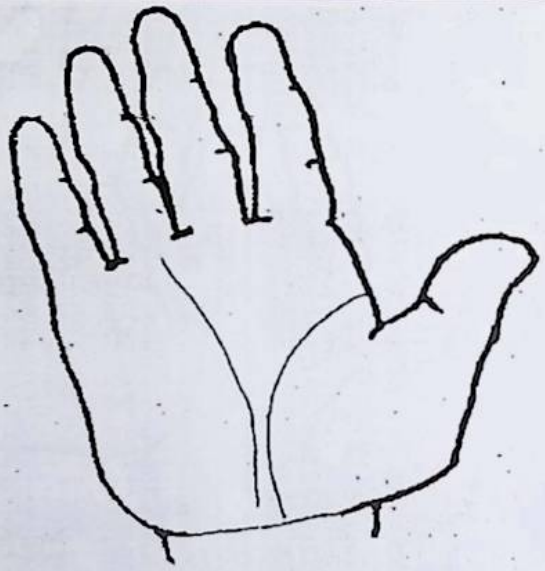

4. बुध पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाली भाग्य रेखा

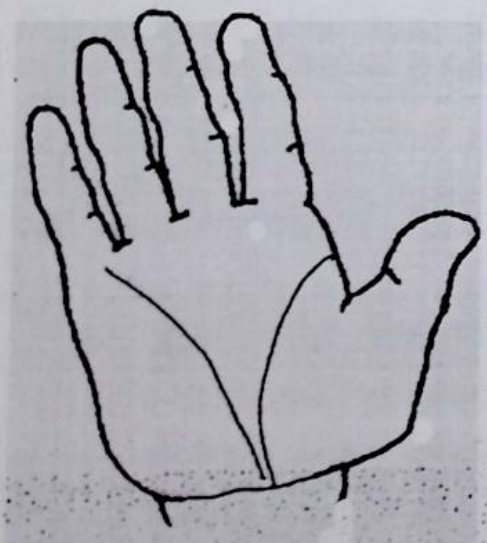

बुध क्षेत्र वाक्पटुता, चातुर्य व व्यवसायी बुद्धि को प्रदान करने वाला क्षेत्र है। अतः इस क्षेत्र तक पहुँचने वाली रेखा जातक में व्यापारिक चातुर्य, अन्वेषण बुद्धि, वैज्ञानिक शोध करने के लिए, चिकित्सकों को विशेषता प्रदान करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. मंगल क्षेत्र तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा

मंगल क्षेत्र नीड़रता, लड़ाकू प्रवृति, क्रोधी भावनाओं का द्योतक है अतः जातक नीड़र, खेलकूद, पुलिस, सेना में यथा स्थान प्राप्त करता है। परन्तु भाग्य रेखा की अपूर्णता, संघर्ष व कठिन परिश्रमी जीवन प्राप्त कराता हैं।

6. चंद्र क्षेत्र तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा

यह क्षेत्र चंचलता, अस्थिरता तथा कल्पना लोक में विचरण करने की प्रवृत्ति प्रदान करती है। अतः इस स्थान से प्रारंभ या इस स्थान पर समापन। जातक को अस्थिर दिमाग, कला व कल्पना लोक में ले जाती है। जिससे जातक कवि, भावुक व कलाकार होता है परन्तु रेखा की अपूर्णता जीवन के पूवार्द्ध में संघर्ष व कठिनाई बताती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. शुक्र क्षेत्र तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा

शुक्र क्षेत्र, काम वासना, मित्र व शत्रु पक्ष को व्यक्त करता है। इस क्षेत्र से आरंभ भाग्य रेखा जातक के बचपन व किशोर अवस्था को दूसरों पर निर्भरता को व्यक्त करती है तथा सहयोगी या मित्रता व मितव्ययी स्वभाव को उजागर करती है।

4. भाग्य रेखा का स्वरूप व दोष

अब हम भाग्य रेखा के गुण व दोष के बारे में विस्तृत अध्ययन करेंगे।

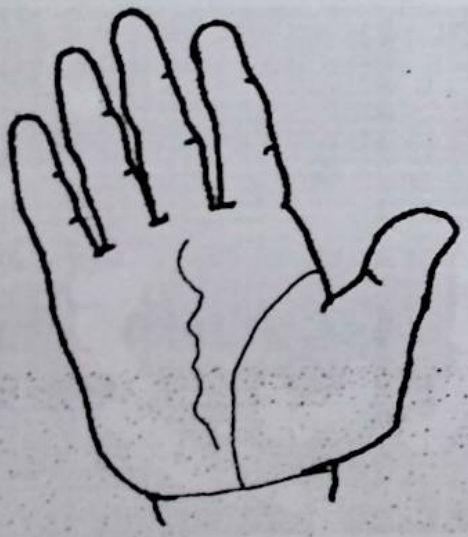

1. लहरदार भाग्य रेखा

जब भाग्य रेखा साँप रूप धारण करें तब जातक के भाग्य मे असफलताओं का समावेश होता है तथा जातक के स्वभाव में ईमानदारी का लोप करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. सीढ़ीदार भाग्य रेखा

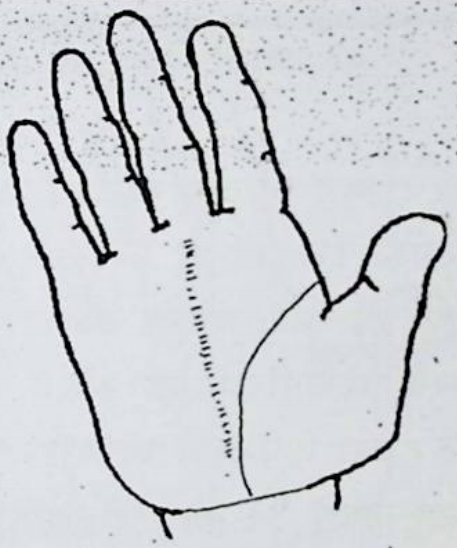

जब भाग्य रेखा का स्वरूप सीढ़ीनुमा हो तब जातक के जीवन में असफलताओं का अम्बार लग जाता है। तथा स्वाभाविक जीवन में अवरोध उत्पन्न होते है जिसके कारण जातक धनहीन व संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

3. श्रृंखलाकार भाग्य रेखा

जब भाग्य रेखा का स्वरूप कड़ीनुमा हो तब जातक के जीवन में उतार–चढ़ाव निरंतर चलता रहता है। जीवन कठिनाईयों से भरा संघर्षयुक्त रहता है। स्वभाव चिड़चिड़ा व शंकालु हो जाता है। शरीर भी निर्बल रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. आड़ी रेखाओं से कटी भाग्य रेखा

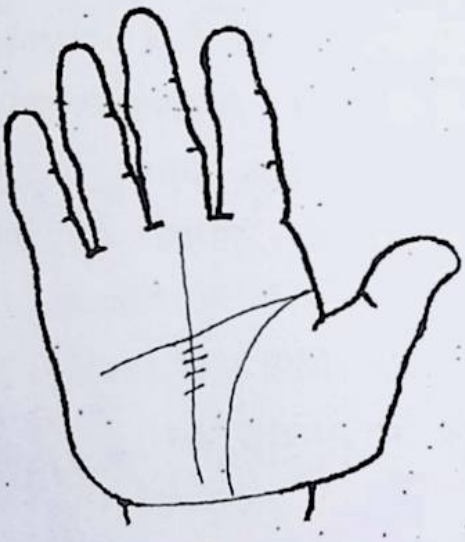

जब जातक की भाग्य रेखा आड़ी रेखाओं से निरन्तर कटती हुई हो तब जातक समय–समय पर परेशानियों से संघर्ष करता है। उसे सफलता प्राप्त होते–होते रह जाती है। कार्य में अनिश्चिता सदैवन बनी रहती है। कटी भाग्य रेखा के बजाय इसका न होना ज्यादा हितकर है।

5. धुंधली भाग्य रेखा

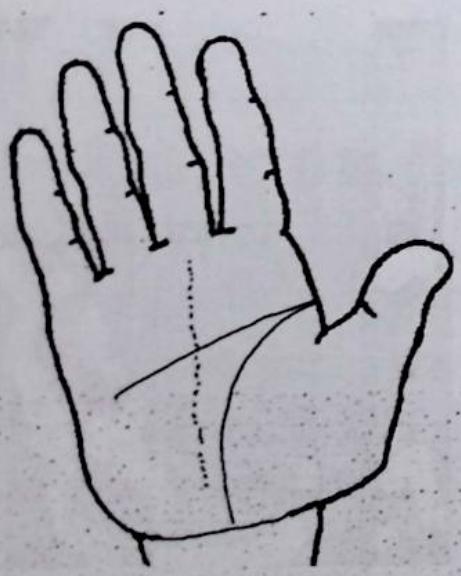

जब भाग्य रेखा छोटी–छोटी रेखा से बनी हो तथा धुधंली हो तब जातक के जीवन में अंधकार तथा असफलताओं का अम्बार लगा रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. उर्ध्व शाखाओं से युक्त भाग्य रेखा

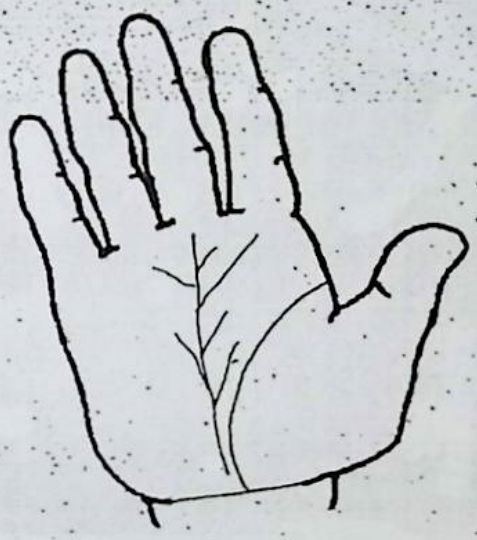

हाथ में उर्ध्व शाखा में यह रेखाएं सदैव शुभ फल प्रदान करती है तथा भाग्य रेखा के साथ ऊपर की ओर बढ़ी शाखाएं अत्यंत सौभाग्य कारक मानी जाती है। भाग्य रेखा के दोनों ओर खिली हुयी शाखाएं तथा अन्य ग्रह पर पहुँच उन ग्रहों के गुणों का समावेश कर, जातक के जीवन मे यश, सफलता तथा मान में इजाफा करती है।

7. भाग्य रेखा का टूटा होना

किसी भी रेखा की टूटन शुभ नहीं होती है। भाग्य रेखा

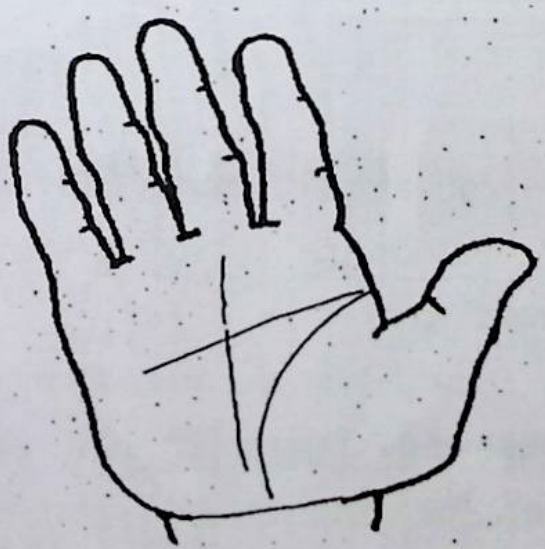

बीच में टूटी हो तब उम्र की गणना के हिसाब से, अचानक असफलता तथा जीवन शैली में बदलाव आता है। यदि यह रेखा बीच में टूट कर पर्वत पर पहुँचे तब दूसरे विवाह के संकेत व दुःखद दांपत्य जीवन का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. भाग्य रेखा का प्रभावी रेखाओं से कटा होना

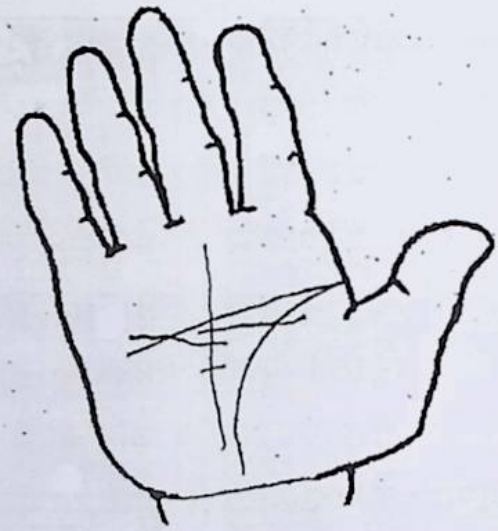

नीचे की ओर जाने वाली रेखाएं व आड़ी रेखाएं सदैव अशुभ फल प्रदान करती है। ठीक उसी प्रकार शुक्र क्षेत्र, मंगल क्षेत्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटने वाली प्रभावी रेखाएं, जातक को उम्र की गणना के हिसाब से कटान, परेशानियां, विफलता तथा शत्रु पक्ष या परिजनों से दुःख प्रदान करती है।

शुक्र क्षेत्र व चंद्र क्षेत्र पर प्रभावी रेखाएं भाग्य रेखा को काटने पर पारिवारिक परेशानियां, मित्रों से हानि व धोखा प्राप्त होता है। चंद्र क्षेत्र में कांटने पर मनोरोगी, आलस्य व स्वास्थ्य की परेशानियां प्राप्त होती है।

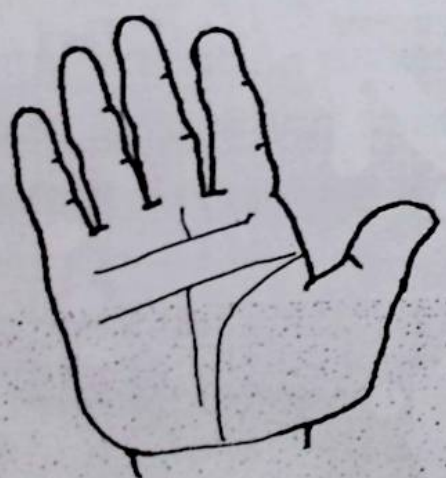

9. भाग्य रेखा का बीच में टूटकर विलुप्त होना व फिर प्रकट होना

भाग्य रेखा का मध्य में पहुँच एक बड़ा हिस्सा विलुप्त हो, (मस्तिष्क रेखा से हृदय रेखा के मध्य) व फिर प्रकट हो आग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़े, या ऊपरी हिस्से में, या नीचे हिस्से में भी विलुप्त हो, फिर प्रकट हो, तब जातक की उम्र की गणना के हिसाब से जातक को कार्य में परिवर्तन, परेशानियां आना, फिर पुनः स्थिति सामान्य होना निश्चित है। कई मामलों में परिवर्तन अच्छे फल भी प्रदान करता है। विलुप्त रेखा, धन हानी, परेशानी तथा अचानक दुर्भाग्य का संकेत है।

10. भाग्य रेखा का न होना

भाग्य रेखा जैसा की इस वाक्य में इसका अर्थ छिपा हुआ है प्रायः निम्न वर्ग के हाथों में भाग्य रेखा का होना कोई मामले नहीं रखता क्योंकि उन्हें अपने जीवन में कर्म निरंतर करना है अथवा धनाढ्य लोगों को कर्म से कोई वास्ता नहीं है। अतः दोनों वर्गों के लिये भाग्य के मामले नहीं है। कई लोगों के हाथ में कोई भाग्य रेखा नहीं होती परन्तु मस्तिष्क रेखा या प्रभावी ग्रह प्रदेश इतने विकसित रहते है कि अपने परिश्रम व कर्म बुद्धि के बल पर अपना भाग्य बनाते है एवं सौभाग्यशाली जीवन व्यतीत करते है।

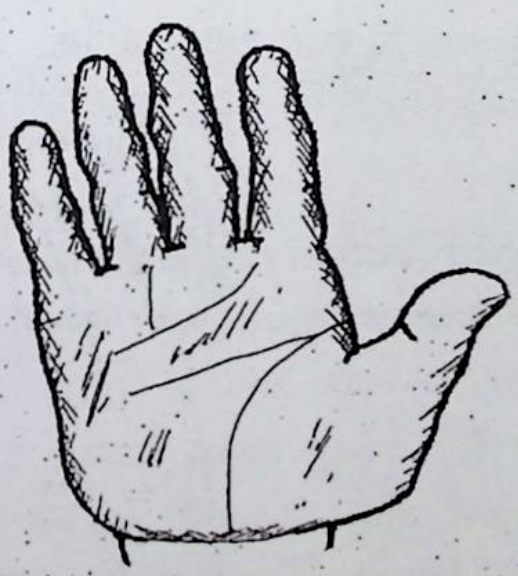

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित यदि भाग्य रेखा न हो ओर अन्य लक्षण जैसे अंगूठा निर्बल हो या मस्तिष्क रेखा निर्बल हो तो जातक का दुर्भाग्य होता है। वह निर्धन, जीवन स्तर सामान्य से कम तथा मजदूरी कर निर्वाह करता है।

11. दो भाग्य रेखाओं का होना

दो भाग्य रेखाओं का होना जातक के लिए सौभाग्य का प्रतीक है। ऐसा जातक कई विद्याओं में सफलता प्राप्त करता है तथा उसकी यश व किर्ती, देश से विदेश तक पहुँचती है। जातक के व्यक्तित्व में लोकप्रिय होने के सभी गुण मौजूद रहते है।

5. भाग्य रेखा का अन्य मुख्य रेखाओं से संबंध

मुख्य रेखाएं, हृदय रेखा तथा मस्तिष्क रेखा हाथ में प्रायः आड़ी होती है। जीवन रेखा भी अंत में आड़ी हो अर्ध चंद्राकार आकृति बनाती है। परन्तु भाग्य रेखा, सूर्य रेखा सदैव उर्ध्व रहती है। अतः अन्य रेखाओं से इसकी विसंगति प्रायः कम देखने को मिलती है। फिर भी मुख्य विसंगतियों का अध्ययन करेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. भाग्य रेखा व आयु रेखा (जीवन रेखा) का संबंध

प्रायः शुक्र क्षेत्र से आक्रामक मंगल क्षेत्र में आयु रेखा का क्षेत्र रहता है। प्रायः इस क्षेत्र के अक्षर अथवा साथ उत्पन्न भाग्य रेखा, अशुभ होती है ऐसा जातक दूसरों पर आश्रित या कुछ साल बाद अलग होता है। अतः व्यक्तित्व में पूर्णता न होने से सफलता काफी संघर्ष के बाद प्राप्त होती है। ऐसी युक्ति से भाग्य रेखा का न होना ज्यादा सार्थक होता है।

2. भाग्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा का संबंध

भाग्य रेखा व मस्तिष्क रेखा एक दूसरे के पूरक है।

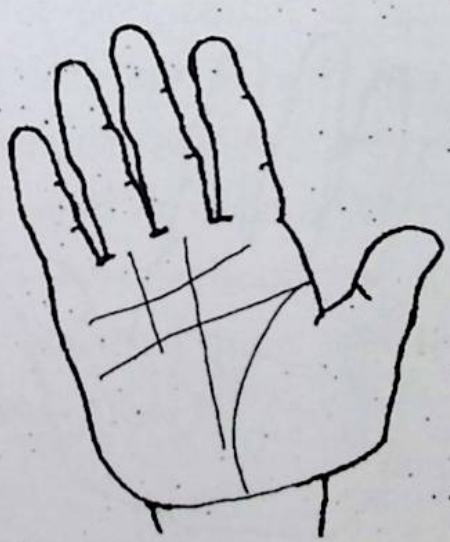

अगर जातक कें भाग्य रेखा नहीं हो और उन्नत मस्तिष्क रेखा व अन्य गुण अच्छे हो तो भाग्य रेखा के न होने पर भी वह सौभाग्यशाली रहता है। वही कमजोर मस्तिष्क रेखा के बावजूद अच्छी भाग्य रेखा दोषों को दूर कर जातक के भाग्य को संवारती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। परन्तु मस्तिष्क रेखा पर भाग्य रेखा अंत व प्रारंभ क्रमशः संघर्षशील जीवन व देरी से भाग्य उदय प्रकट करती है।

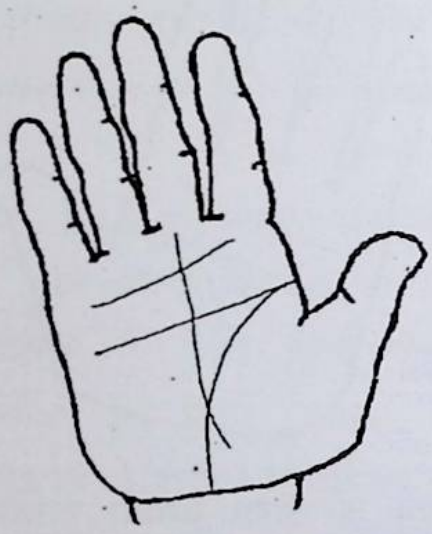

3. भाग्य रेखा व हृदय रेखा का संबंध

हृदय रेखा मानवीय भावनाओं, संवेदना तथा प्रेम संबंधों की प्रगाढ़ता पर आधारित है तथा भाग्य रेखा का इसे काटना सहयोग देना शुभ फल प्रदान करता है। यदि काटती है तो प्रेम संबंधों में खटास व सहयोग दे तो अन्य ग्रह पर पहुँचने से जातक को उच्च वर्ग से संबंध, यश प्राप्त होता है।

4. भाग्य रेखा व सूर्य रेखा का संबंध

प्रायः भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर समाप्त होती है। परन्तु यही रेखा यदि सूर्य क्षेत्र पर पहुँचे तो भाग्य रेखा व सूर्य रेखा एक रूप हो जाती हैं अतः सूर्य रेखा व भाग्य रेखा का निर्धारण कठिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाता है। यह सौभाग्य सूचक है तथा जातक कई विद्याओं का जानकार तथा हर क्षेत्र में सफल हो यश एवं किर्तिमान स्थापित करता है। कई हाथों में सूर्य रेखा व भाग्य रेखा पाई जाती है तब जातक के सौभाग्य में चार चांद लग जाते है। रेखाओं का होना विशिष्टता का सूचक है।

6. भाग्य रेखा व प्रभावी रेखाएं

शाखाविहिन भाग्य रेखा का महत्व कम होता है। परन्तु प्रभावी रेखाओं की विसंगतियां भाग्य रेखा के साथ अद्भूत संबंध स्थापित करती है। इनका उल्लेख हम नीचे करेंगे।

1. भाग्य रेखा पर छोटी–छोटी शाखाएं

प्रभावी रेखाएं छोटी–छोटी रेखाओं के रूप में उर्ध्व रूप में दोनों ओर विद्यमान होने पर जातक के गुणों में इजाफा होता है तथा जातक को धन व सम्पन्नता वाला जीवन प्राप्त होता है।

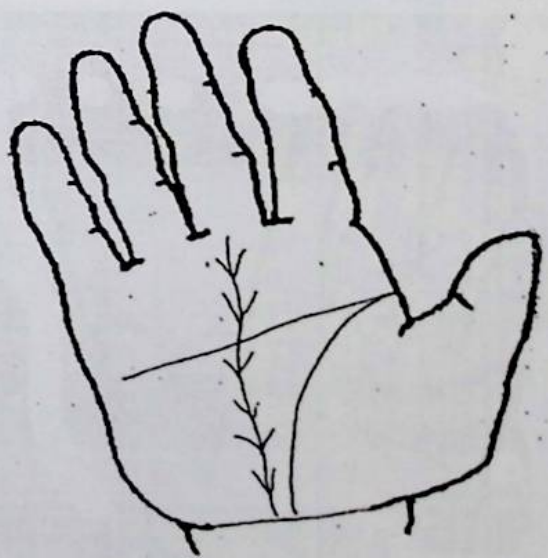

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. भाग्य रेखा पर छोटी–छोटी प्रभाव रेखाएं नीचे की ओर

हाथ के नीचे की ओर (अर्थात् मणिबंध की ओर) गिरती रेखाएं अशुभ होती है। ऐसा जातक संघर्ष व परिश्रम करते हुये निर्धनता से जीवन व्यापन करता है। उसकी उन्नति सदैव बाधित रहती है।

3. भाग्य रेखा से कोई प्रभावी रेखा लंबी हो गुरू पर्वत पर पहुँचे

ऐसी स्थिति में जातक भाग्यशाली तथा कार्य विशेष में योग्यता प्राप्त कर बड़ी उपलब्धियां प्राप्त करता है। वह अच्छा साहित्यकार या प्रकांड पंड़ित, आदर्शवादी व पथ प्रदर्शक हो मील का पत्थर साबित हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. भाग्य रेखा से प्रभावी रेखा सूर्य पर्वत पर पहुँचे

प्रभावी रेखा के सूर्य क्षेत्र पर पहुँचने पर जातक अच्छा शिक्षाविद् ख्याति प्राप्त कर अपार धन व सफलताएं अर्जित करता है।

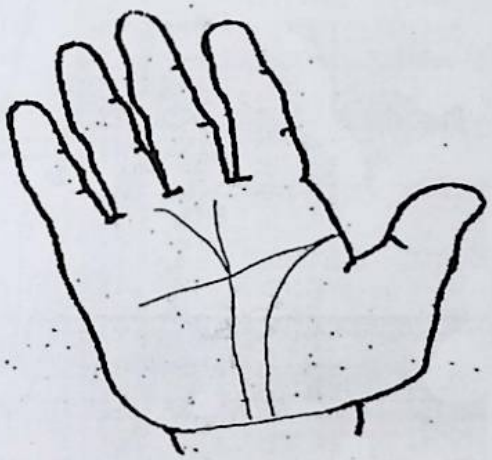

5. भाग्य रेखा की प्रभावी शाखा बुध पर्वत पर पहुँचे

ऐसी स्थिति में जातक तीक्ष्ण बुद्धि वाला चतुर व्यापारी, सफल चिकित्सक (शल्य चिकित्सक) तथा विज्ञान में अपार सफलताएं हासिल करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. हथेली के मध्य में भाग्य रेखा के साथ चारों ओर जाती प्रभावी रेखाएं

हथेली में रेखाएं प्रभावी हो उर्ध्व रूप ले ओर भाग्य रेखा के साथ चारों और फैले तब जातक असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी व सर्वगुण सम्पन्न होता है और मनचाही सफलताएं प्राप्त कर यश व किर्ती स्थापित करता है।

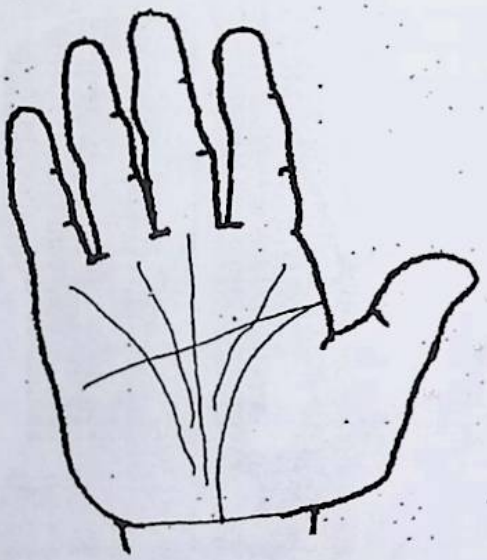

7. भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर पहुँच दोनों ओर प्रभावी रेखाएं उत्पन्न करेः–

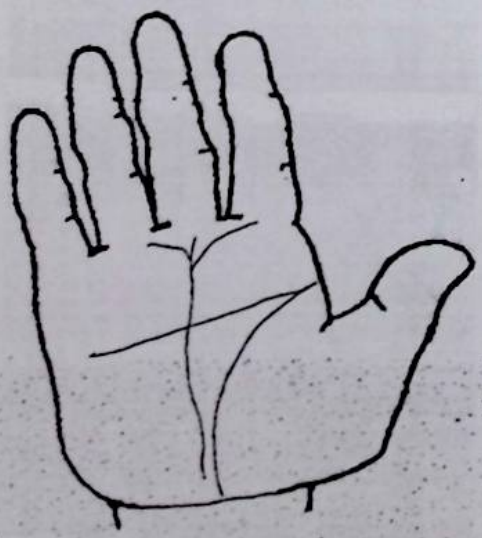

जब भाग्य रेखा शनि क्षेत्रपर पहुँच दोनों और सूर्य पर्वत व गुरू पर्वत पर प्रभावी रेखा पहुँचने पर तीनों पर्वत क्षैत्रों के गुणों का समावेश जातक के जीवन में कर अपूर्ण सफलताएं सम्पन्नता व धन प्राप्ति का योग बनाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पहुँच दो भागों में विभक्त हो

भाग्य रेखा के अंत पर दो प्रभावी रेखाएं दो पर्वत क्षेत्रों पर पहुँचे तब जातक भाग्यवान व सम्मानजनक जीवन यापन करता है। यह शुभ फल प्रदान करती हैं।

9. चंद्र क्षेत्र व प्रभावी रेखा से भाग्य रेखा की विसंगतियां

चंद्र क्षेत्र कल्पना लोक, कला, प्रियता व प्रेम संबंधों को उत्प्रेरकता प्रदान करता है।

अ. यदि कोई रेखा चंद्र क्षेत्र से भाग्य रेखा से सहयोग कर मिले–ऐसी अवस्था में जातक भाग्यवश विपरित लिंग से सहायता तथा धन प्राप्त कर विवाह बंधन में बधंता है तथा सुखद जीवन प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. भाग्य रेखा के समानान्तर चल चंद्र क्षेत्र में भाग्य रेखा के समानान्तर चलती रहे तब विपरित लिंग से आकर्षण व प्रेम संबंध काफी लंबे अर्से तक चलेंगे परन्तु विवाह नहीं होगा तथा उत्तरार्द्ध में अलग हो जायेंगे।

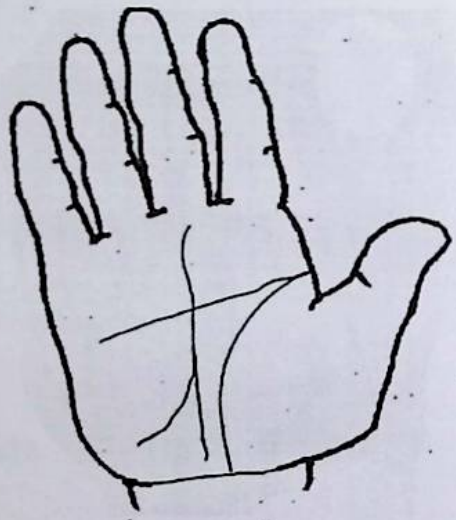

स. समानान्तर चलकर मिल जाये तो प्रेम संबंध लंबे अर्से के बाद विवाह में परिवर्तन होंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. समानान्तर चलकर भाग्य रेखा को काटकर जीवन रेखा की ओर जाये–ऐसी अवस्था में प्रेम संबंध आगे चल घृणा व विवाद बन दुःखद अंत होगा।

इ. समानान्तर चल भाग्य रेखा व जीवन रेखा को काट मंगल क्षेत्र में पहुँचे ऐसी स्थिति उत्पन्न होना अशुभ है। जातक प्रेम संबंधों के कारण कलंकित तथा शत्रुता तक पहुँच जीवन नरक कर लेता है। यह दुःखद प्रसंग है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. प्रभावी रेखा समानान्तर चल अशुभ चिन्ह लिये हो

चंद्र क्षेत्र पर भाग्य रेखा के समानान्तर चलकर अंत पर क्रास, द्विप या आड़ी रेखा होने पर जातक के प्रेमी की मृत्यु की सूचक है। यही चिन्ह (क्रास द्विप या आड़ी रेखा) प्रारंभ स्थल पर हो तो प्रेम संबंधों में कलंक बदनामी तथा परेशानियां उठानी पड़ती है।

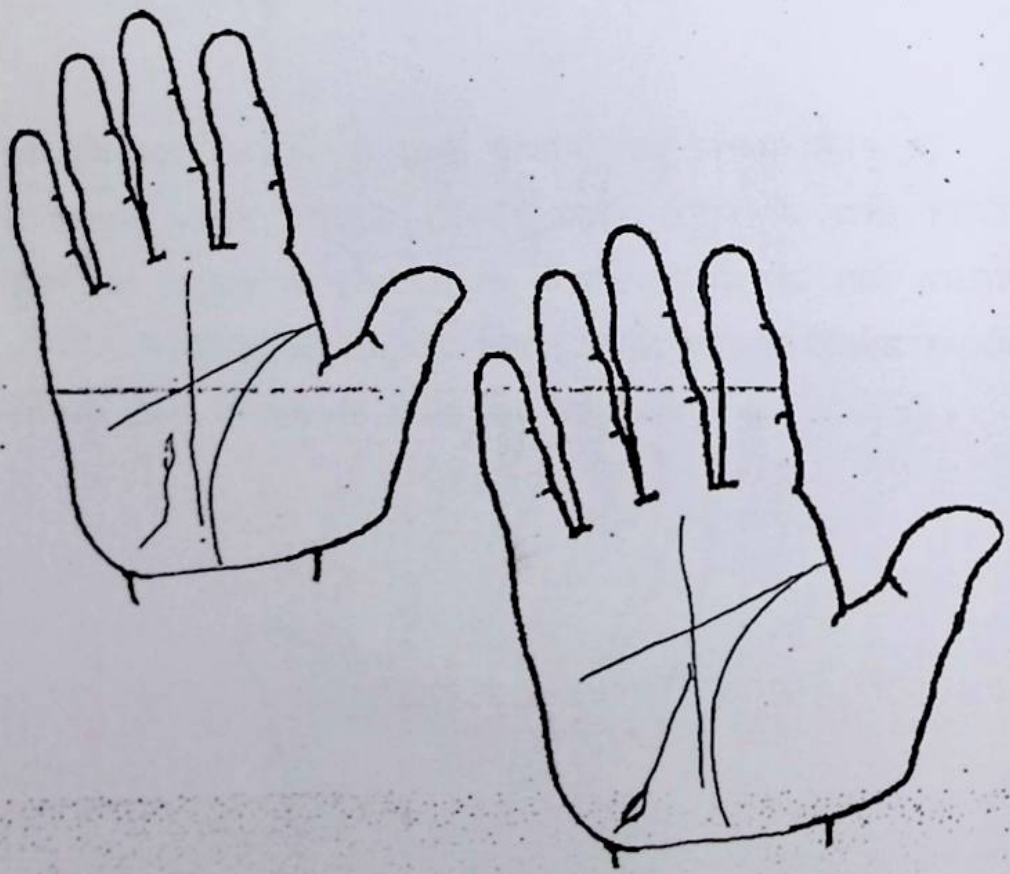

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. मणिबंध से ऊपर भाग्य रेखा प्रारंभ हो पर प्रभावी शाखाओं में हो

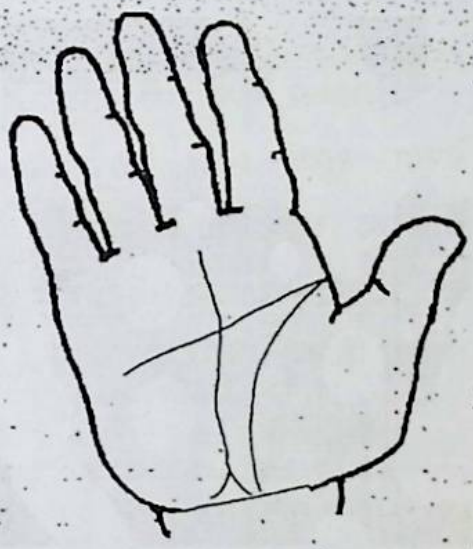

प्रारंभ पर दो शाखाएं होना जातक के माता–पिता से विलय होने के संकेत है। कारण वश वह माता–पिता का सानिध्य नहीं पाता। उसका लालन–पालन अन्य लोग करते है।

12. चंद्र क्षेत्र में एक शाखा ओर दूसरी रेखा शुक्र क्षेत्र तक पहुँचे

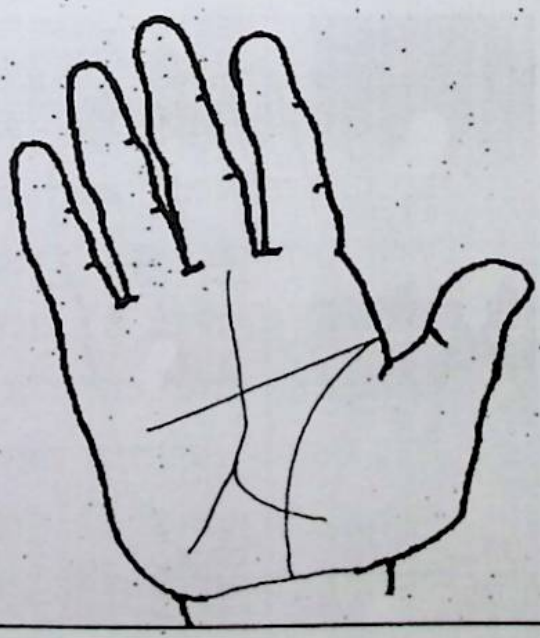

चंद्र क्षेत्र में विभाजित हो दूसरी शाखा, शुक्र क्षेत्र तक पहुँचे ऐसी स्थिति अपूर्ण कारक बनती है। जातक की कल्पना शीलता तथा स्वयं प्रेरणा का अद्‌भूत मेल हो उत्कृष्ट रचना होती है। जातक अच्छा चित्रकार, इंजीनियर या प्रखर साहित्यकार होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. भाग्य रेखा की प्रभावी रेखा शुक्र क्षेत्र तक पहुँचे

भाग्य रेखा से कोई प्रभावी रेखा शुक्र क्षेत्र में पहुँचे तब जातक का उसके जीवन साथी से विद्रोह कम उम्र में ही हो जाता है।

14. चंद्र क्षेत्र की प्रभावी रेखा भाग्य रेखा के प्रारंभ पर पहुँचे

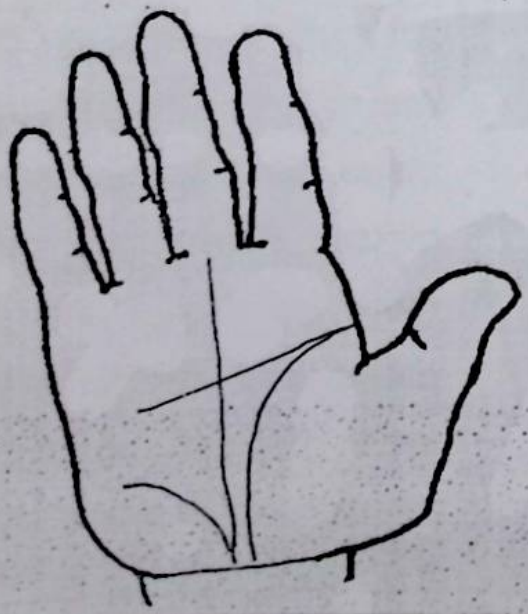

ऐसी स्थिति में जातक कल्पनाशीलता से नये आयाम बना नये संयोग बनाता है तथा सफलताएं प्राप्त करता है। ऐसा जातक संगीत व कला या इतिहासकार हो नई रचनाएं करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15. चंद्र क्षेत्र से निकली भाग्य रेखा तथा प्रारंभ स्थल पर दूरी प्रभावी रेखा

ऐसी स्थिति, जातक की दुर्घटना व जल से आघात तथा मृत्यु का संकेत है।

16. उच्च चंद्र क्षेत्र से निकली भाग्य रेखा पर पहुँचे

जब प्रभावी रेखा चंद्र क्षेत्र के ऊपरी स्तर से भाग्य रेखा तक पहुँचे तब जातक भावुकता में प्रेम संबंधो में हानि उठाता है। प्रायः प्रेम संबंध असफल होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

17. भाग्य रेखा पर चंद्र क्षेत्र की प्रभावी रेखा को शुक्र क्षेत्र की प्रभावी रेखा द्वारा काटा जाना

ऐसी स्थिति में जातक के प्रेम संबंधी विवाह में परिवार पूर्ण विरोध व बाधा उत्पन्न करता है तथा परिवार में कोई मान्यंता नहीं प्राप्त होगी।

18. चंद्र क्षेत्र से निकलकर कोई शाखा भाग्य रेखा से मिल सूर्य क्षेत्र पर पहुँचे

यह संयोग भाग्यशाली तथा जातक का विवाह के प्रति हित घटाने में होता है। जिस से जातक को धन, मान, सम्मान प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

19. चंद्र क्षेत्र की प्रभावी रेखा भाग्य रेखा से मिले व भाग्य रेखा टूटकर आगे बढ़े

ऐसी स्थिती में जातक प्रेम विवाह करता है जिसमें परिवार वालो का विरोध होता है। जातक को कुछ वर्षो तक परेशानियां उठानी पड़ती है परन्तु बाद में स्थिति सामान्य होती है।

7. भाग्य रेखा व चिन्ह

शुभ व अशुभ चिन्ह भाग्य रेखा पर अपना बहुत असर उत्पन्न करते है। इनका क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे।

1. भाग्य रेखा व नक्षत्र

भाग्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह जातक के लिये अशुभ होता है। अलग–अलग स्थिति में इसका अलग–अलग प्रभाव होता है।

अ. भाग्य रेखा के मध्य से नक्षत्र चिन्ह इस अवस्था मे आयु की गणना के अनुसार उस स्थिति में भंयकर दुर्घटना अथवा धोखा या धन की हानि निश्चित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. भाग्य रेखा के प्रारंभ स्थल एवं शुक्र स्थल पर नक्षत्र चिन्ह–ऐसी अवस्था में जातक के माता–पिता की मृत्यु तथा बचपन कष्टमय व परेशानियों में व्यतीत होता है।

स. भाग्य रेखा व जीवन रेखा दोनों रेखाओं के अंत पर नक्षत्र चिन्ह– ऐसी स्थिति में जातक का स्वास्थ्य खराब तथा पक्षाघात हो सकता है।

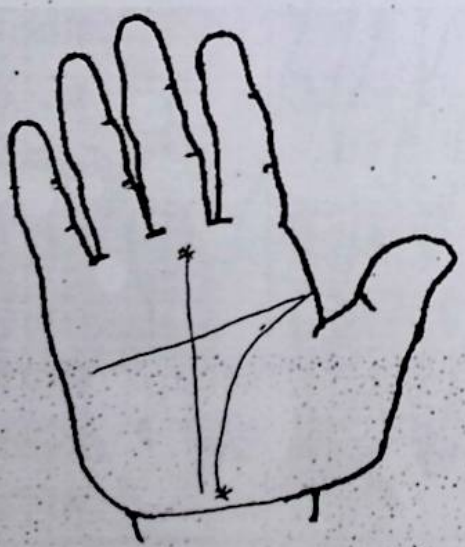

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. भाग्य रेखा की समाप्ती पर नक्षत्र चिन्ह तथा चंद्र क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह– जातक मनोरोगी तथा स्वास्थ्य की खराबी तथा आवेग व मनोरोगी से ग्रस्त हो आत्म हत्या कर सकता है।

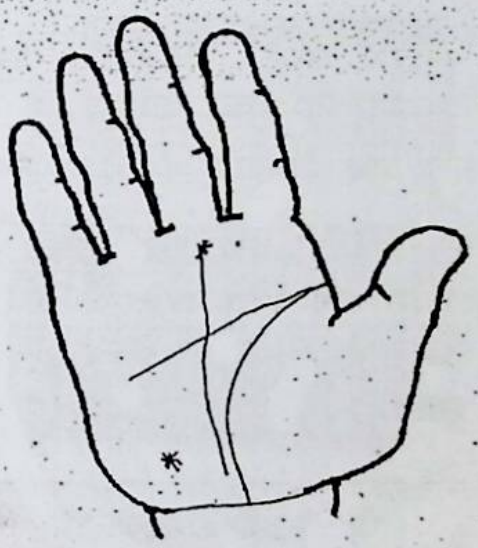

2. भाग्य रेखा व गुणन चिन्ह

भाग्य रेखा व गुणन (क्रास) का चिन्ह अशुभता प्रदान करता है।

अ. भाग्य रेखा के अंत पर गुणन चिन्ह – ऐसे जातक की मृत्यु हिंसा के कारणों से होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. भाग्य रेखा के मध्य बिन्दु पर गुणन चिन्ह हो– जातक के जीवन मे आयु की गणना के हिसाब से अमूल परिवर्तन तथा दुर्घटना का सूचक है।

स. भाग्य रेखा के मध्य पर एक ओर क्रास का चिन्ह– ऐसी अवस्था में जातक में धर्म या निष्टा से आमूल परिवर्तन हो नैतिक कार्यो में समर्पित या सामाजिक सेवा का परिवर्तन आता है तथा आत्म शक्ति का अपूर्व विकास होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. भाग्य रेखा व अन्तिम सिर पर आड़ी रेखाएं

जातक के हाथ में शनि क्षेत्र पर अन्त होने के बाद अन्तिम भाग छोटी-छोटी रेखाओं से कटा हुआ होने पर जातक पर विपत्तियों का पहाड़ टूटता है। कारावास भी हो सकता है।

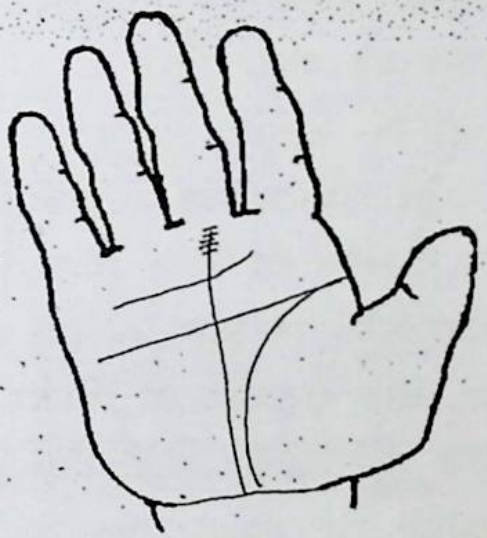

4. भाग्य रेखा पर चतुर्भुज

चंतुर्भूज का चिन्ह शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। यह केवल विषम परिस्थितियों (चंद्र क्षेत्र या शुक्र क्षेत्र) में ही अशुभ होता है। अलग-अलग स्थिति अलग-अलग फल प्रदान करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. भाग्य रेखा पर चतुर्भूज का चिन्ह–मध्य क्षेत्र में चतुर्भूज चिन्ह दुष्प्रभावों से रक्षा करता है तथा होने वाली हानि को कम करती है।

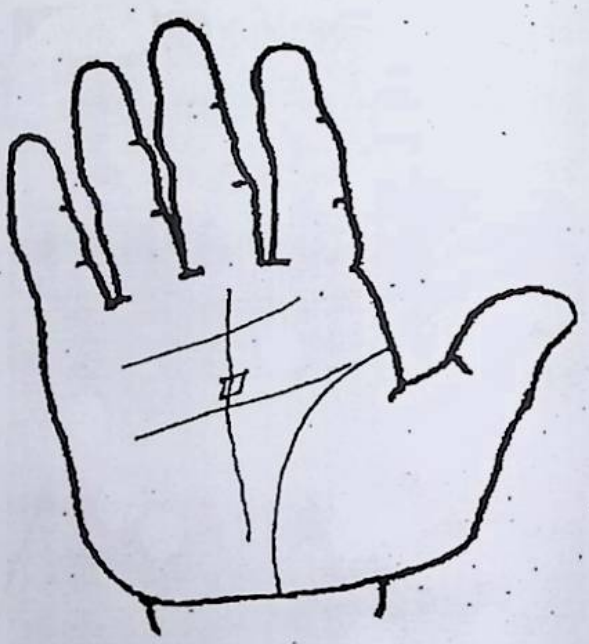

ब. भाग्य रेखा के टूटने पर चतुर्भूज का चिन्ह–भाग्य रेखा मध्य या प्रांत पर टूटी हो और चतुर्भूज से घिरी होने पर होने वाले दोष प्रभावों या अशुभ फल से निजात प्रदान कर स्थिति को सामान्य करती है।

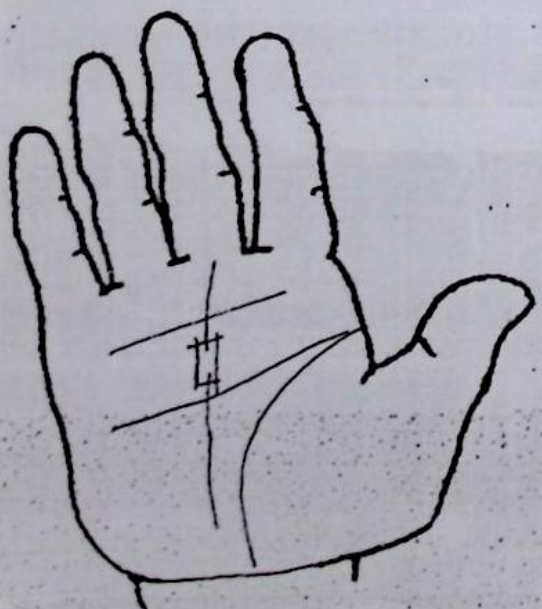

स. भाग्य रेखा पर निम्न मंगल क्षेत्र पर स्पर्श करता हुआ चतुर्भूज चिन्ह–ऐसी अवस्था में जातक पर पारिवारिक परेशानियां व छोटी दुर्घटना होने का संकेत होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. भाग्य रेखा पर चंद्र क्षेत्र पर चतुर्भुज चिन्ह– इस क्षेत्र पर चतुर्भुज का चिन्ह अशुभ फल कारक है क्योंकि चंद्र क्षेत्र आवेग व मनोवृत्ति के उद्वेग को प्रकट करता है। अतः जातक को यात्राओं में दुर्घटना का संकेत है।

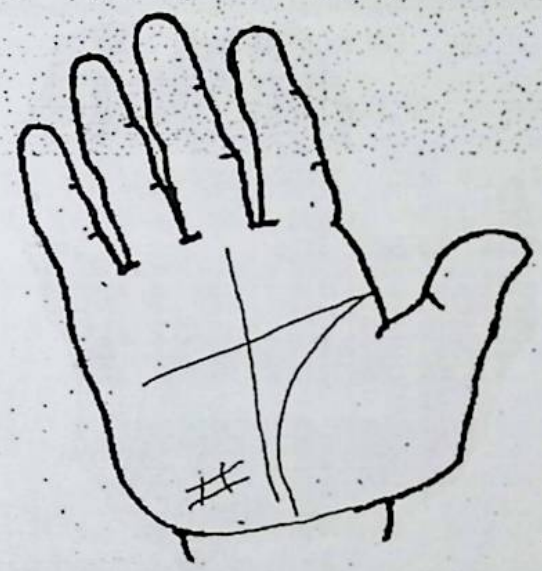

5. भाग्य रेखा पर त्रिभुज का चिन्ह

त्रिभुज का चिन्ह शुभ माना जाता है तथा इसकी उपस्थिति कई क्षेत्रों में भाग्य के साथ चार चांद लगा देती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. निम्न मंगल क्षेत्र पर स्पर्श करता हुआ त्रिकोण– उन्नत मंगल क्षेत्र पर भाग्य रेखा से स्पर्श करता हुआ त्रिभुज का चिन्ह जातक को सेना, पुलिस में शौर्य व यश प्रदान करता है।

ब. भाग्य रेखा त्रिभुज का चिन्ह जीवन में एक रास्ता तथा निर्विन्ध स्थिति प्रदान करता है।

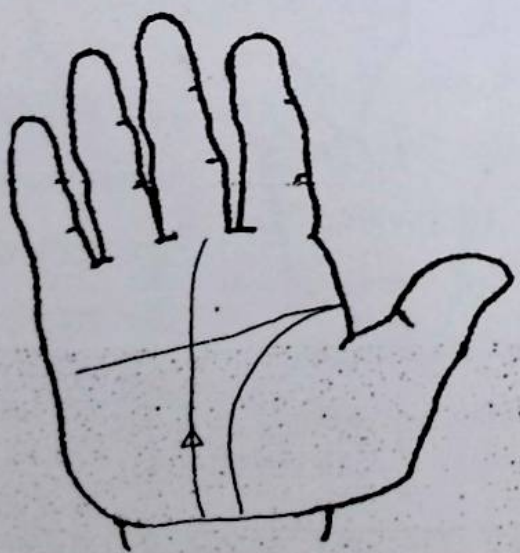

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. भाग्य रेखा पर बिन्दु चिन्ह

भाग्य रेखा पर बिंदु का चिन्ह अशुभता तथा परेशानियों का कारक होता है उम्र की गणना के हिसाब से उस समय, बाधांए व परेशानियां उत्पन्न होती है जो स्थाई नहीं होती आगे स्थिति सामान्य होती है।

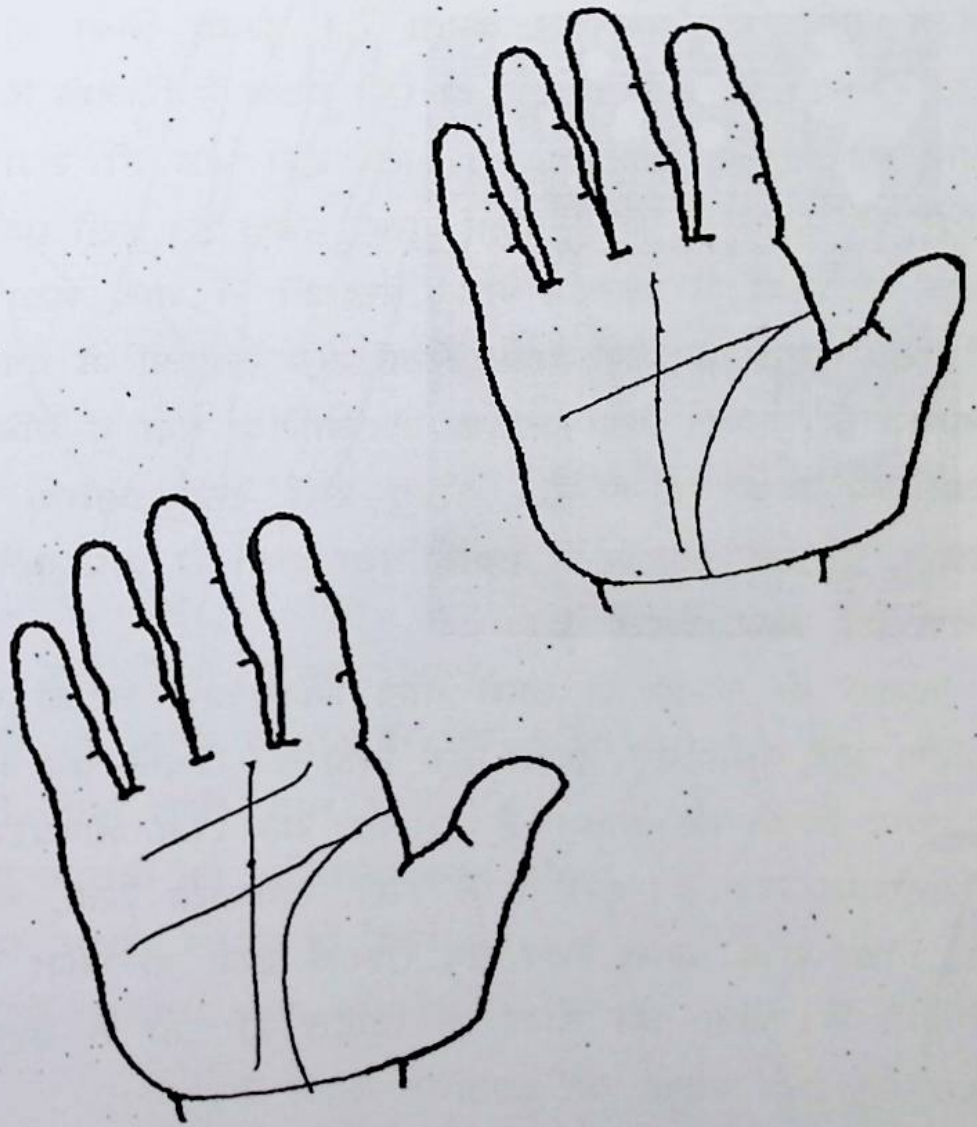

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य रेखा

जैसा कि विदित है कि इस चराचर व समस्त भौतिक सृष्टि में भौतिक रूप से सूर्य ही दृष्टिगोचर होता है तथा समस्त सृष्टि को प्रभावित करता है। इसके बिना सृष्टि संभव ही नहीं है। जल व सूर्य दो ऐसे घटक है जिनके बिना संसार की उत्पत्ति असंभव है। अतः सूर्य ग्रह ही समस्त चराचर को संचालित करने वाला मुख्य घटक है। इसी प्रकार जातक के हाथों में समस्त मुख्य रेखाओं में भाय रेखा व सूर्य रेखा प्रमुख है। वैसे भाग्य रेखा सूर्य रेखाओं में काफी समानता है। भाग्य रेखा जातक के आर्थिक पक्ष व दैनिक जीवन का कच्चा लेखा है। परन्तु सूर्य रेखा जातक के पराक्रम, प्रतिष्ठा, समाज में स्थान तथा कर्मो से प्राप्त कीर्ति व यश को प्रकट करती है।

जातक के जीवन मे आने वाले भाग्यकारी घटकों का निर्धारण सूर्य पर्वत पर स्थिति सूर्य रेखा की स्थिति को देख कर स्पष्ट किया जा सकता है। मूलतः यह रेखा भाग्यरेखा की सहायक रेखा है। इसे कीर्ति रेखा, सफलता रेखा, यश रेखा, विद्या रेखा, ज्ञान रेखा एवं ऐश्वर्य रेखा के नाम भी दिये गये है। जैसा की नामों में विदित हो रहा है इसके फलित भी ऐसे घटकों को प्रभावित करते है।

सूर्य रेखा के प्रभाव व गुणों में हाथों की बनावट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकार तथा अंगूठे व अंगुलियों की विभिन्नताएं अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव ड़ालती है।

जैसे दार्शनिक व कोनिक हाथों की स्पष्ट व गहरी सूर्य रेखा, वर्गाकार व चमासाकर हाथों की छोटी सूर्य रेखा से अत्यधिक प्रभावशील होती है।

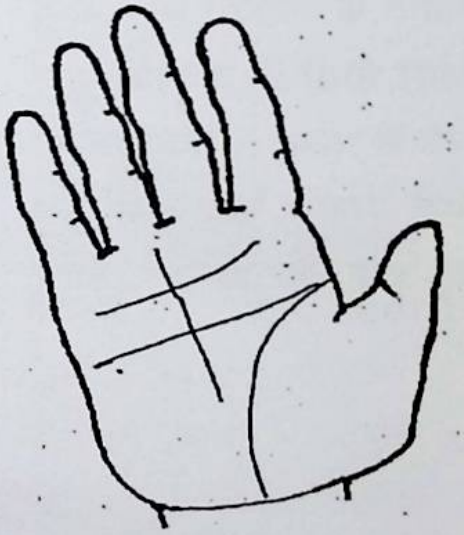

सूर्य रेखा अथवा भाग्य रेखा के गुणों व प्रभावों का पूर्ण लाभ तभी प्राप्त होता है जब जातक की मस्तिष्क रेखा तथा अंगूठा सबल हो अन्यथा इसके प्रभाव क्षीण हो जाते हैं।

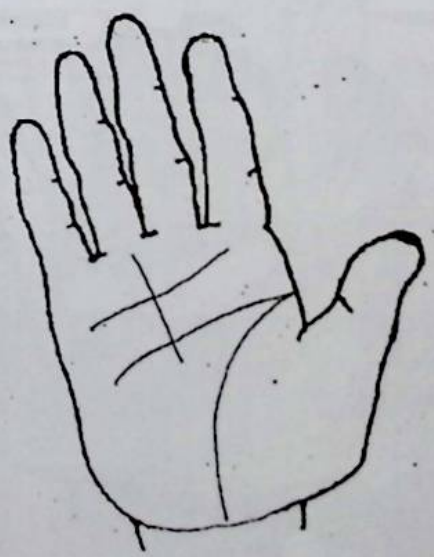

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह भी ध्यान देने वाली बात है कि सूर्य पर्वत पर उर्ध्व रेखाओं को देख हम उन्हें सूर्य रेखा न माने क्योंकि ये वास्तव में प्रभाव रेखाएं होती है जो कि शुभ होती है परन्तु इनका असर काफी समय बाद बड़ी उम्र 50 वर्ष के उपरांत होता है।

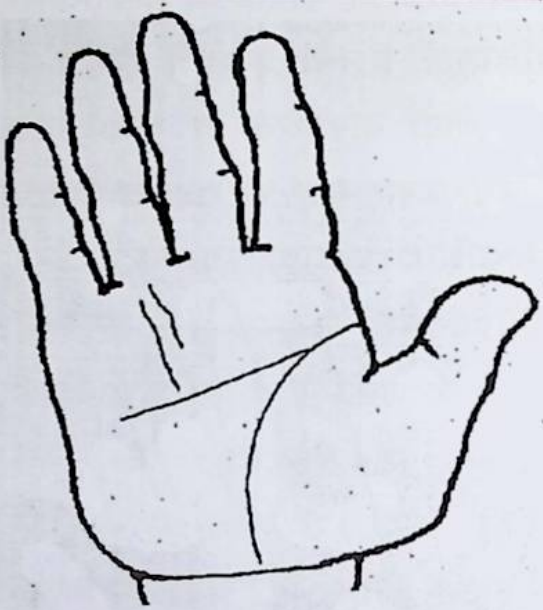

अनामिका से गहरी व स्पष्ट लंबी रेखा सूर्य रेखा होती है तथा इसके प्रभाव से जातक निड़र व जोखिम कार्यो में भी सफलता प्राप्त कर सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी भी रेखा का अध्ययन छोटी से छोटी बारिकी को दृष्टिगत करते हुये करना आवश्यक है अतः इसका सुव्यवस्थित रूप व क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे।

1. सूर्य रेखा का प्रारंभ स्थल
2. सूर्य रेखा का समापन स्थल
3. सूर्य रेखा तथा ग्रह प्रदेश
4. सूर्य रेखा का स्वरूप व दोष
5. सूर्य रेखा का अन्य मुख्य रेखाओं से संबंध
6. सूर्य रेखा व प्रभावी रेखाएं
7. सूर्य रेखा व चिन्ह

1. सूर्य रेखा का प्रारंभ स्थल

सूर्य रेखा के प्रारंभ स्थल कई होते है तथा मुख्य पर्वत क्षेत्रों से प्रारंभ हो उन पर्वत क्षेत्रों के गुणों का सामंजस्य होना, अलग-अलग प्रभाव उत्पन्न करती है।

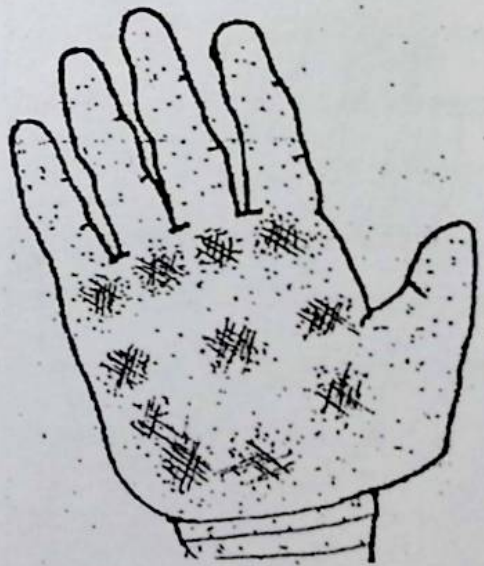

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. हृदय रेखा के ऊपर सूर्य पर्वत पर छोटी सी सूर्य रेखा

सूर्य क्षेत्र से निकलने वाली प्रत्येक रेखा शुभ कारक होती है। फिर सूर्य रेखा हो तो सौभाग्य में वृद्धि करती है परन्तु इसका छोटा होना, जातक की सफलता व सुख में काफी विलंब पैदा करता है। इतने अन्तर काल के बाद इस उपलब्धि का कोई खास महत्व नहीं रहता। जीवन के अन्तिम समय में सफलता का कोई महत्व नही रह जाता है।

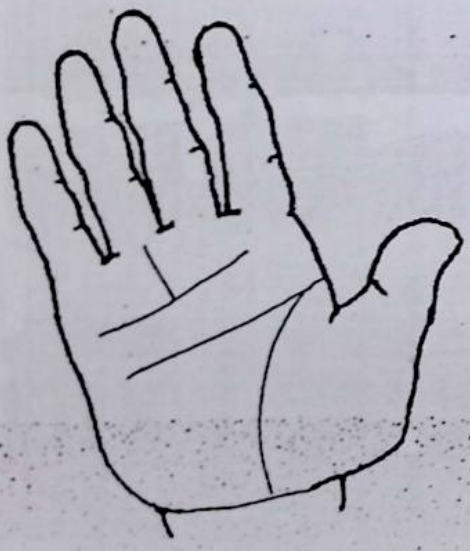

2. हृदय रेखा से निकल सूर्य क्षेत्र पर पहुँचने वाली सूर्य रेखा

हृदय रेखा से निकलने वाली सूर्य रेखा वाला जातक कलाप्रिय, साहित्यिक रूचिवाला होता है। उसके मन पर भावनओं का असर ज्यादा होता है। ऐसे व्यक्ति उम्र के उत्तरार्द्ध में सफलता व यश अर्जित करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ होने वाली सूर्य रेखा

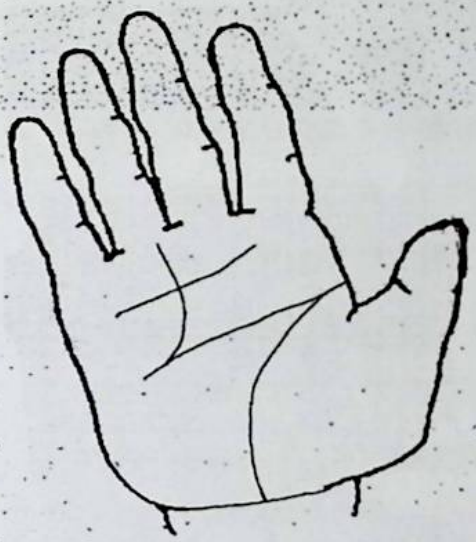

सूर्य रेखा का प्रारंभ मस्तिष्क रेखा से होने वाले जातक पैतिस के बाद सफलताएं प्राप्त करते है तथा बुद्धि व चातुर्य के बल पर सफलताएं प्राप्त करते है। प्रायः लेखकों, वैज्ञानिकों व शोधकत्ताओं के हाथ में यह रेखा पाई जाती है।

4. भाग्य रेखा से प्रारंभ होने वाली सूर्य रेखा

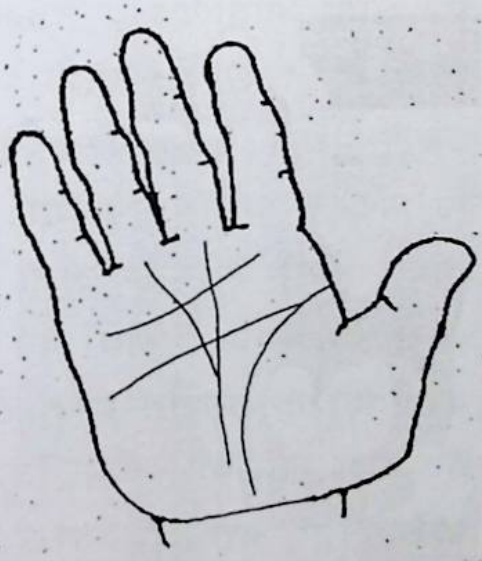

भाग्य रेखा के मध्य से निकल सूर्य रेखा, सूर्य पर्वत पर पहुँचना, अत्यंत सौभाग्य सूचक है। जातक के जीवन मे अचानक भाग्यशाली परिवर्तन होते है। ये परिवर्तन अचानक विशिष्ट सफलता कारक होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सूर्य रेखा बुध रेखा से प्रारंभ हो

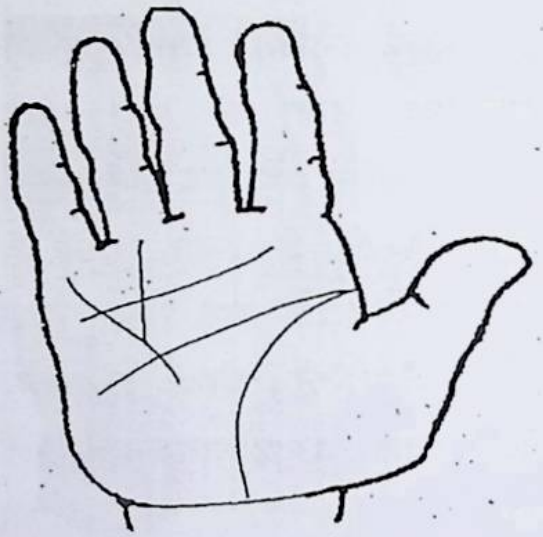

सूर्य रेखा बुध रेखा से प्रारंभ हो सूर्य रेखा जातक में बुद्धि चातुर्य, वाक् चातुर्य, चिकित्सा विज्ञान, अन्वेषक क्षेत्र में अद्भूत सफलताएं प्राप्त करता है। साथ ही जातक का स्वास्थ्य बहुत अच्छा होता है।

6. सूर्य रेखा हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा के मध्य स्थान से उत्पन्न हों

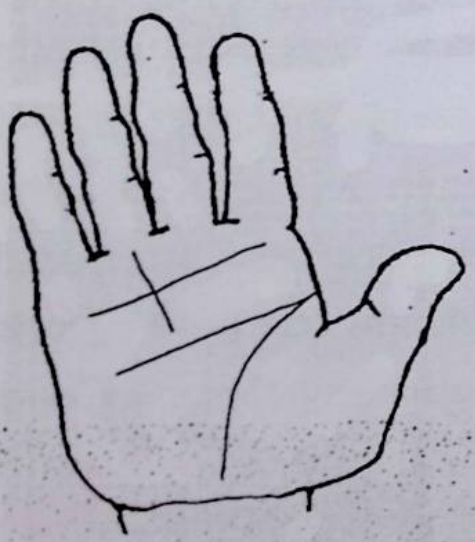

यह क्षेत्र मंगल क्षेत्र के पास होने से जातक पराक्रमी पर थोड़ा आवेशित व उद्वेग में कार्य करने से भाग्य में थोड़ी उथल-पुथल का कारक होता है अर्थात् कभी अपकिर्ती भी प्राप्त होती है। सफलता भी आयु के मध्य पड़ाव 41 से 45 वर्षो के उपरांत प्राप्त होती है तथा इसका श्रेय उसके परिश्रम, आत्मविश्वास व बौद्धिक क्षमता को प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. सूर्य रेखा व मंगल क्षेत्र

मंगल क्षेत्र बड़ा व व्यापक होने से क्रमबद्ध अध्ययन में।

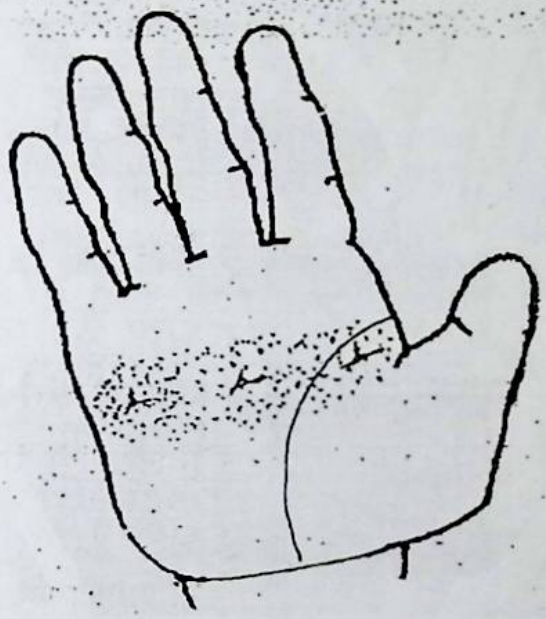

अ. निम्न मंगल क्षेत्र–निम्न मंगल क्षेत्र से निकल सूर्य पर्वत पर पहुँचने वाली सूर्य रेखा, जातक को परिश्रमी बनाती है। जातक को सौभाग्य से कुछ नहीं मिलता, उसके लिये कठोर परिश्रम आवश्यक होता है। वह जो कुछ भी मुकाम प्राप्त करता है वह उसके परिश्रम से अर्जित करता है।

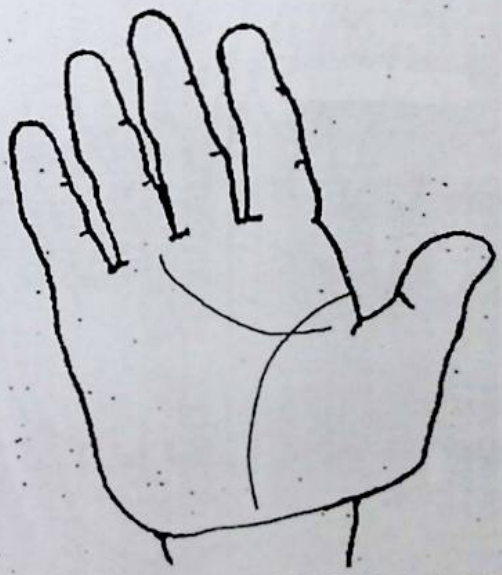

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. मंगल के मैदान से निकलने वाली सूर्य रेखा

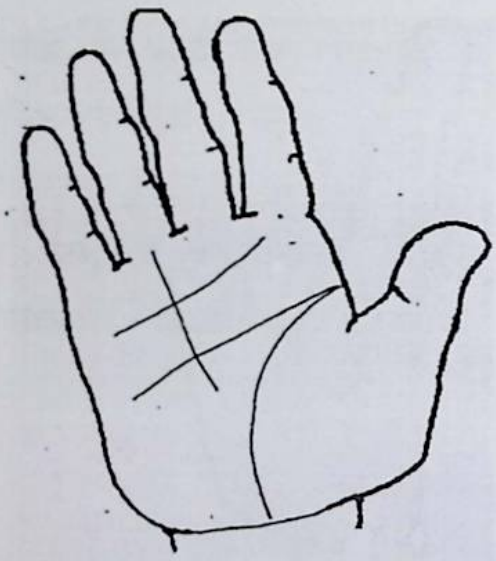

इस स्थान से सूर्य रेखा की उत्पत्ति होने वाला जातक विकट परिस्थितियों में धैर्य रख संघर्ष करने वाला, निड़र व कर्म में विश्वास रखने वाला होता है। जातक का प्रारंभिक जीवन संघर्ष व कठिनाईयों में बितता है परन्तु आत्मशक्ति व मेहनत के बल पर भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तन करने की क्षमता रखते है व जीवन पर्यन्त संघर्ष कर जीवन को सुखमय बनाते है।

स. उच्च मंगल क्षेत्र से निकलने वाली सूर्य रेखा

इस स्थान से उत्पन्न रेखा जातक को उत्तम स्वास्थ्य, बलिष्ठ शरीर रचना तथा निड़र व साहसी बनाती है अतः जातक खेलकूद, सेना, पुलिस में ख्याति प्राप्त कर शौर्य व प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जातक का साहस उसे उत्कृष्ठ स्थान प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. जीवन रेखा से निकलने वाली सूर्य रेखा

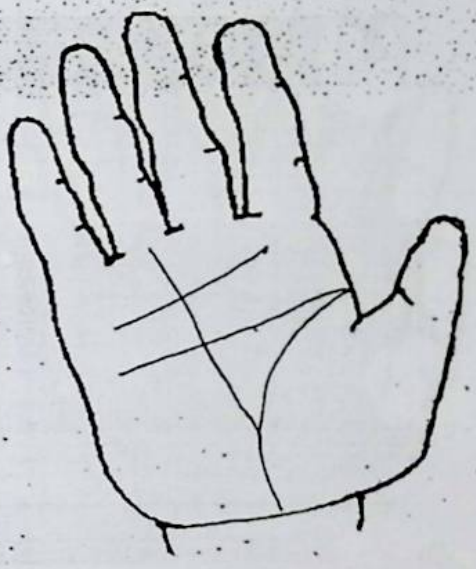

जीवन रेखा से निकलने वाली सूर्य रेखा वाला जातक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेता है तथा प्रारंभिक जीवन में ही कई तरह के सुख भोग लेता है। आगे स्वयं के प्रयासों से अच्छी सफलताएं शीघ्र ही अर्जित कर लेता है। वह कलाप्रिय, साहित्यिक रूचिवाला, संवित्र सफलताएं प्राप्त कर लेता है। घर, संतान व धन, साधारण परिश्रम से प्राप्त कर लेता है।

9. मणिबंध के पास से निकलने वाली सूर्य रेखा

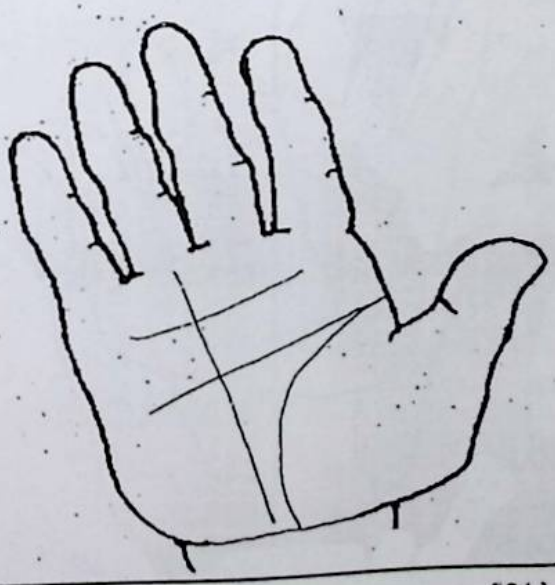

जब सूर्य रेखा मणिबंध से ऊपरी क्षेत्र से प्रारंभ हो सूर्य पर्वत पर पहुँचे तब जातक अपनी बुद्धि व चातुर्य से बड़ी–बड़ी सफलताएं प्राप्त करता है। शीघ्र ही समृद्धि व ख्याति प्राप्त कर यश प्राप्त कर लेता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

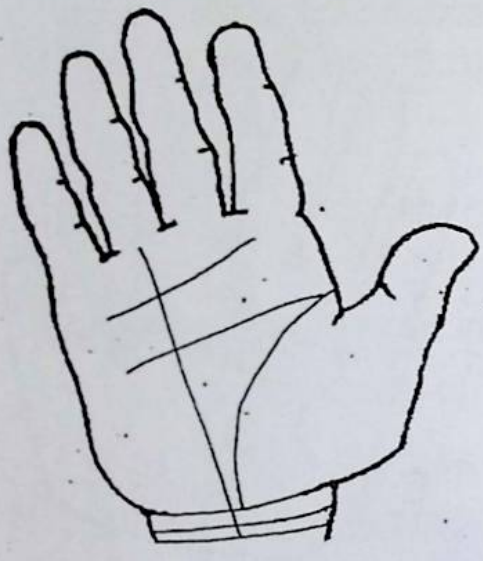

यह रेखा यदि तीसरे मणिबंध पर्व से उत्पन्न हो तो हानि पहुँचाती है तथा इन समस्त गुणों में कमी आ जाती है।

10. चंद्र क्षेत्र से प्रारंभ होने वाली सूर्य रेखा

चंद्र क्षेत्र से प्रारंभ होने वाली सूर्य रेखा वाला जातक बहुमूखी प्रतिभा वाला लोकप्रिय सम्मोहक व्यक्तित्व वाला, वाक् चातुर्य वाला, संबंध बनाने व निभाने में अग्रणी होता है। ये कला के पारखी होते है। सभी से सहयोग ले अपने उद्देश्यों को पूर्ण कर लेते है। प्रायः नेता, अभिनेताओं के हाथों में यह सहयोग देखने को मिलता है।

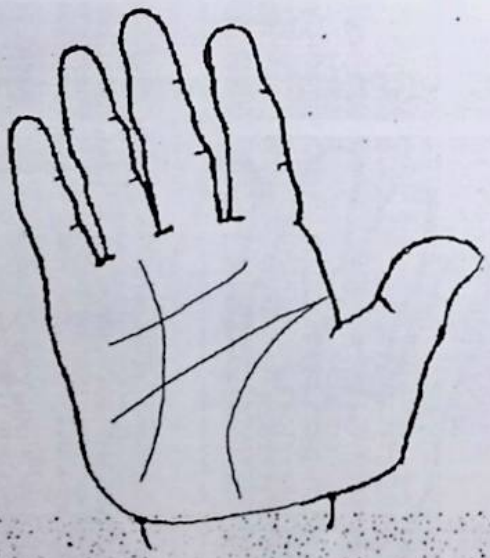

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. शुक्र क्षेत्र से प्रारंभ सूर्य रेखा

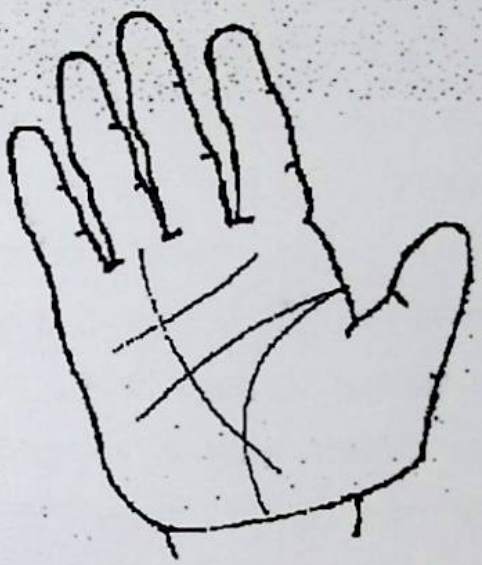

शुक्र क्षेत्र से सूर्य पर्वत पर पहुँचने वाली सूर्य रेखा जातक को प्रारंभिक जीवन मे आश्रित अवस्था में रखती है। जातक में स्वावलंबन की कमी रहती है परन्तु पारिवारिक प्रतिष्ठा बिना संघर्ष के प्राप्त होती है उसकी सफलताओं में पारिवारिक सहयोग रहता है।

2. सूर्य रेखा का समापन स्थल

अभी हमने आरंभ स्थल से फलित का अध्ययन किया अब इसके समापन स्थल का अध्ययन करेंगे।

1. सूर्य रेखा गुरू पर्वत पर समाप्त हो

जब सूर्य रेखा सूर्य पर्वत पर पहुँच कर गुरू पर्वत पर मुड़ जाये तब जातक अपने पराक्रम के बल पर बुद्धि का उपयोग कर कुशल नेतृत्व कर ऊंचें पद को प्राप्त करता है। वह एक अच्छा राजनीतिज्ञ हो सकता है। हांलाकि यह संयोग बहुत कम देखने को मिलता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. सूर्य रेखा शनि क्षेत्र पर समाप्त हो

जब सूर्य रेखा, सूर्य पर्वत पर पहुँच कर शनि क्षेत्र पर समाप्त हो तब जातक के लिये अशुभ प्रभाव उत्पन्न करती है। सूर्य क्षेत्र के पराक्रम व परिश्रम पर पानी फिर जाता है। जातक आलसी या कर्म से जी चुराने वाला हो, असफलता प्राप्त करता है। अतः भाग्य प्राप्त होते–होते अशुभता में बदल जाता है।

3. सूर्य रेखा बुध क्षेत्र पर समाप्त हो

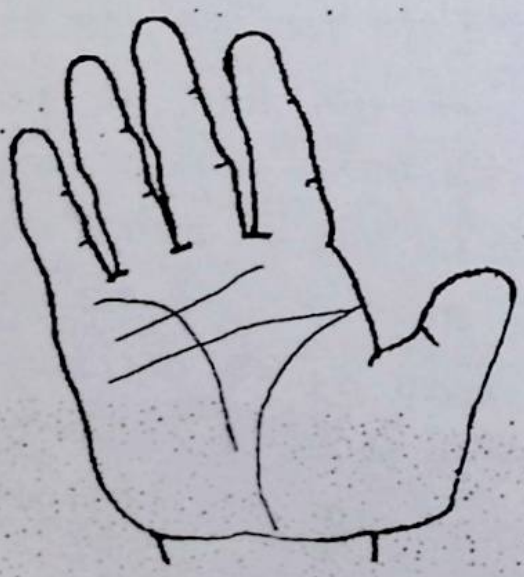

सूर्य रेखा, सुर्य पर्वत पर न पहुँच बुध पर्वत पर मुड़ जाती है। ऐसे जातक पैसों को अधिक महत्व देते है। उनके लिये आर्थिक पक्ष बड़ा होता है। पहले से अपना स्वार्थ साधते है। व्यापारिक बुद्धि के कारण काफी सफलताएं प्राप्त करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. सूर्य रेखा का समापन सूर्य पर्वत पर

ऐसे जातक पराक्रमी भाग्यशाली हो बड़े पद पर पदासीन हो यश व सम्मान जनक जीवन व्यापन करते है।

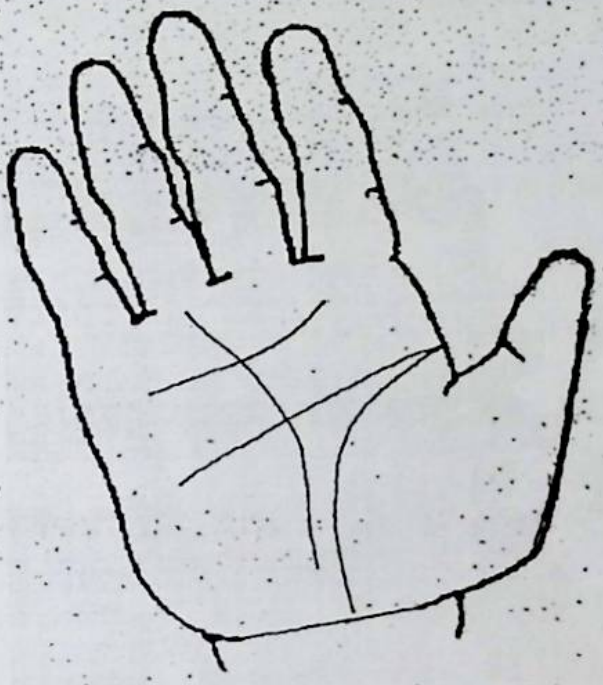

5. सूर्य पर्वत पर पहुँच त्रिशुल कि आकृति बनावे

समापन पूर्व त्रिशुल की आकृति शुभ फल प्रदान करने वाली होती हैं। जातक भाग्यवादी होते हुए हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर धन सम्पदा व यश प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह त्रिशुल की शाखा दो, विपरित ग्रहों, बुध व शनि पर पहुँचे तब जातक भाग्यशील, पैतृक धन, व संपत्ति का स्वामी तथा परिवार या कुल वाला होता है।

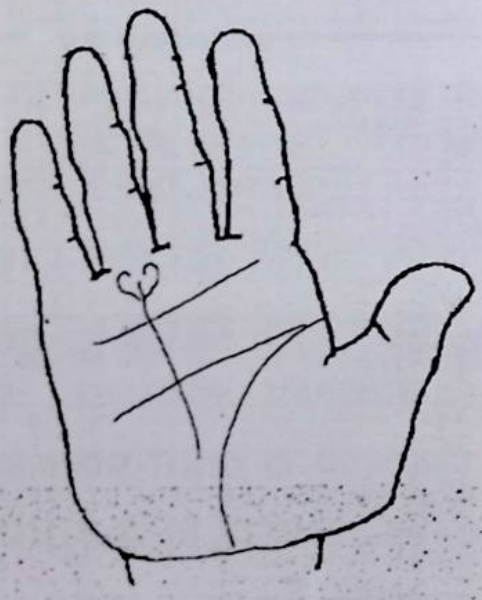

यदि त्रिशुल की शाखाएं अन्दर की ओर मुड़ी हुई हो तो यह जातक के लिये अशुभ संकेत है। ऐसी स्थिति में जातक की धन हानि या विवाद या संपत्ति के बंटवारों में मुकदमा हारने से हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. सूर्य रेखा प्रारंभ पर मोटी और अंत पर पहुँच अत्यन्त महीन

प्रारंभ होते वक्त अच्छी अवस्था व अन्त पर पतली (महीन) रेखा जातक के सौभाग्य का उम्र के साथ–साथ घटने का संकेत है।

7. सूर्य रेखा के समापन पर गो पुंछ की आकृति

जब सूर्य रेखा अंत पर पहुंच बहुत सी शाखाओं में विभक्त हो गो पुंछ बनावे तब जातक की एकाग्रता नष्ट होकर कई कार्यो को करने में रूचि होती है। अतः असफलताओं को गले लगा लेता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. सूर्य रेखा के समापन पर बिंदु का चिन्ह

यह जातक के लिये अशुभ है। उसकी सफलताओं का अंत, उम्र के अंत समय में होता है तथा उसकी समृद्धि तथा यश अन्त में नष्ट हो जाते हैं।

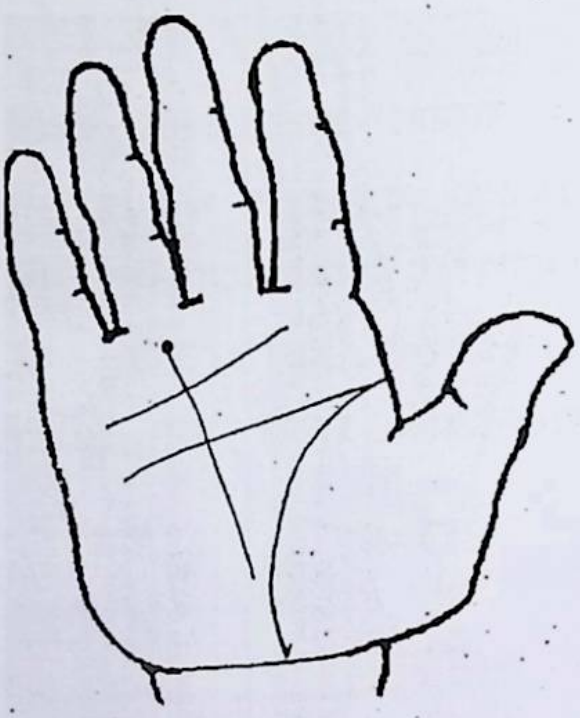

9. सूर्य रेखा के अंत पर आड़ी रेखा

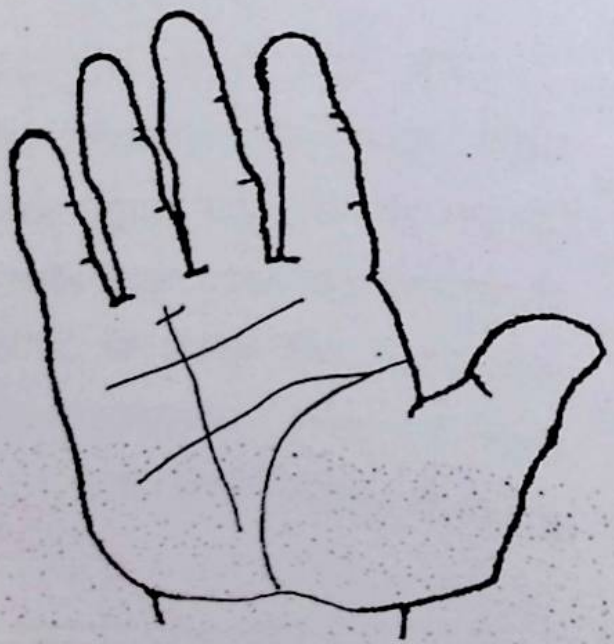

समापन पर आड़ी रेखा अशुभ होने का संकेत है। जातक की सफलतायें व प्रगति मे बाधा सी उत्पन्न होती है जिससे वृद्धावस्था में जीवन कष्टमय हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. सूर्य रेखा के समापन पर दोनों ओर समानान्तर रेखाएं

सूर्य क्षेत्र पर सूर्य रेखा का पहुंचना सौभाग्यकारी है परन्तु दोनों और रेखाएं अपने फलित विभिन्न अवस्थाओं में अलग–अलग उत्पन्न करते है।

अ. सूर्य क्षेत्र पर पहुँच दोनों ओर समानान्तर रेखा–

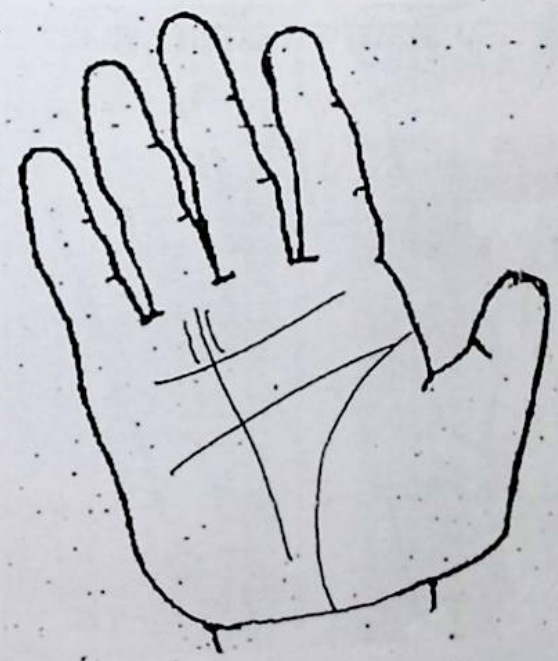

दोनों ओर उर्ध्व रेखाएं बहुत सौभाग्यकारी हो जातक को अति विशिष्ट स्थान दिलाती है। जातक बुद्धिमान, मोहनी व्यक्तित्व वाला अच्छे कुल में जन्म ले, उच्च पद की प्राप्ती कर समस्त भौतिक सुखों का स्वामी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. सूर्य रेखा पर समानान्तर रेखा घुमावदार हो– ऐसी अवस्था में जातक के भाग्य में कमी उत्पन्न होती है तथा जातक के कई कार्य उसके बदनामी या कलंक की ओर अग्रसर करते है। समाज में भी स्थान नीचे हो जाता है।

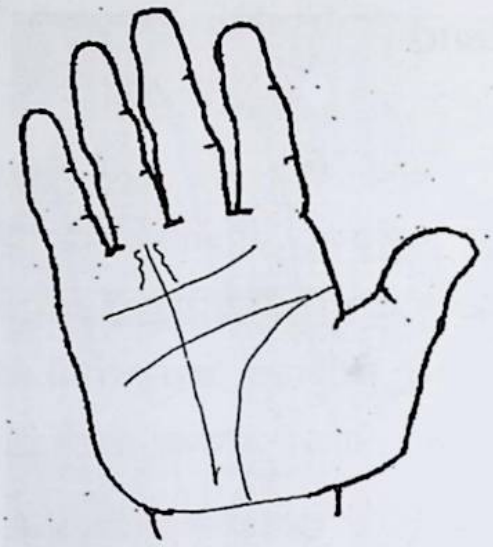

स. सूर्य रेखा के समानान्तर, बड़ी रेखाएं– सूर्य रेखा को एक ओर चंद्र क्षेत्र से व दूसरी ओर शुक्र क्षेत्र से समानान्तर रेखाएं निकले तो यह जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलवाती है या अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. सूर्य रेखा का अंत लहरदार शाखाओं में होना– ऐसी स्थिति जातक के परिश्रम व धन संपत्ति व यश को कम करने वाले तथा अंत में नष्ट करने वाले संकेत है। यह अशुभ संकेत है।

11. सूर्य रेखा के समापन पर नक्षत्र का चिन्ह

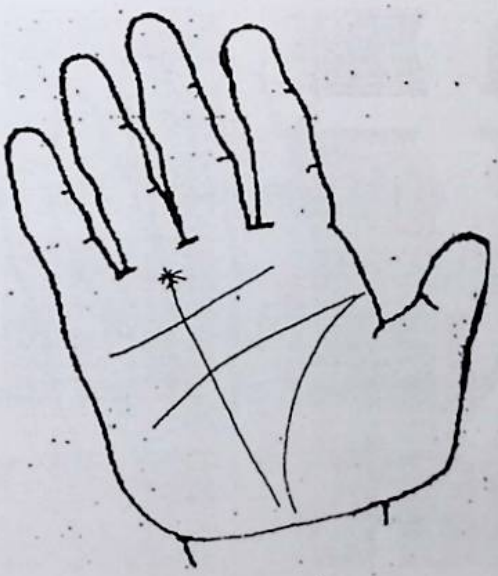

यह चिन्ह सौभाग्यकारी तथा जातक को अतिविशिष्ट बनाता है परन्तु साथ ही जातक का स्वास्थ्य कमजोर तथा मन को अशांत करना है। उसे सभी भौतिक सुख देता है परन्तु जातक में बैचेनी व अतृप्त आकांक्षाओं को भी जन्म देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. सूर्य रेखा तथा ग्रह प्रदेश

सूर्य रेखा व पर्वत क्षेत्रों के संबंध देखने पर हमे ज्ञात होता है कि मूल पर्वत क्षेत्रों के गुण व अवगुण फलित में समाहित होते है। अर्थात् इन क्षेत्रों से सूर्य रेखा का उदय था समापन इन पर्वत क्षेत्रो के गुण विशेष को सौभाग्यकारी या अशुभ फल प्रदान करते है। हालांकि अभी हमने प्रारंभ व समापन स्थल पर इन सभी की चर्चा की है परन्तु ग्रह विशेष पर किस किस्म का प्रभाव उत्पन्न करता है। यह हम ग्रह प्रदेशों के साथ देखेंगे।

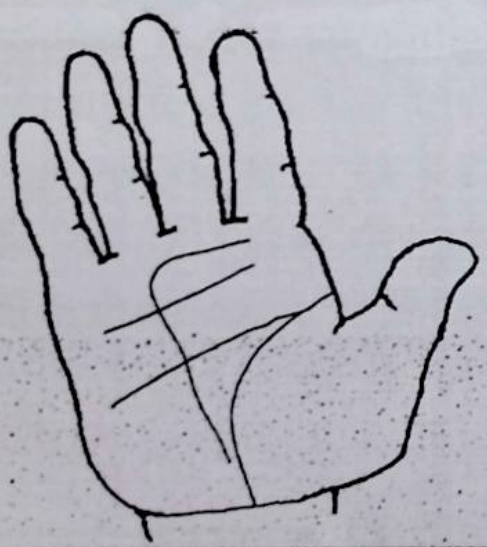

1. गुरू पर्वत क्षेत्र एवं सूर्य रेखा

प्रायः सूर्य रेखा विषम परिस्थितियों में ही इस स्थान पर पहुँचती है परन्तु यह शुभ फलकारी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शनि पर्वत एवं सूर्य रेखा

इस स्थान पर सूर्य रेखा का पहुंचना उसके गुणों को कम करता है परन्तु विशिष्ट स्थिति में बहुमूखी प्रतिभा उत्पन्न कर सफलताएं प्राप्त होती है।

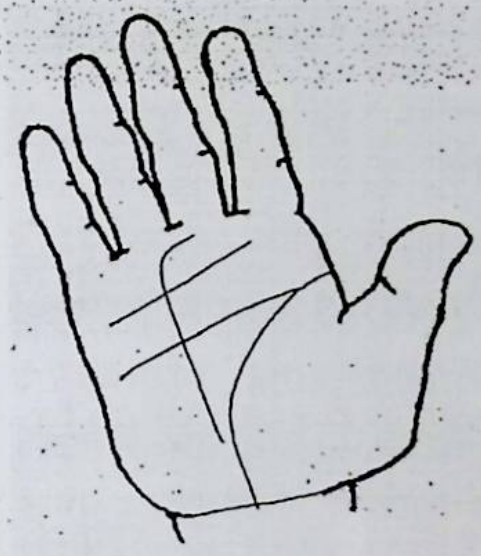

3.सूर्य पर्वत क्षेत्र एवं रेखा

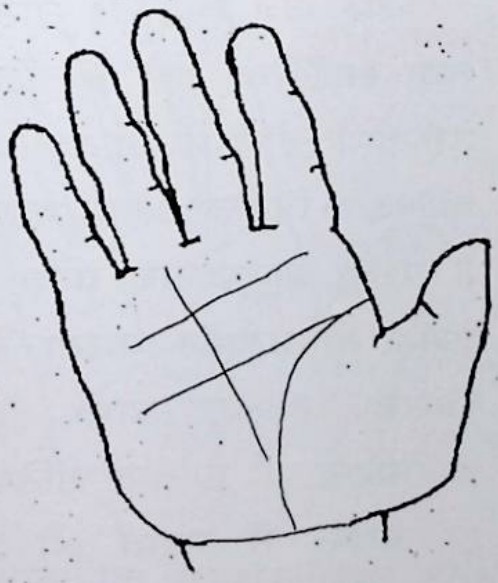

सूर्य क्षेत्र पराक्रम तथा बुद्धि चातुर्य का समाहित रूप है इन्हीं गुणों की अधिकता होने पर इसें सूर्य रेखा का नाम दिया गया है। इसकी विशिष्टताएं खेलकूद, सेना में यश व कीर्ति दिलाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. बुध पर्वत क्षेत्र एवं रेखा

यह क्षेत्र वाक्पटुता, व्यापार, बुद्धि व चातुर्य का क्षेत्र होने से जातक में सम्मोहक शक्ति उत्पन्न करता है तथा सूर्य रेखा के समावेश से जातक को परिश्रमी व शारीरिक स्वस्थता प्रदान करती है।

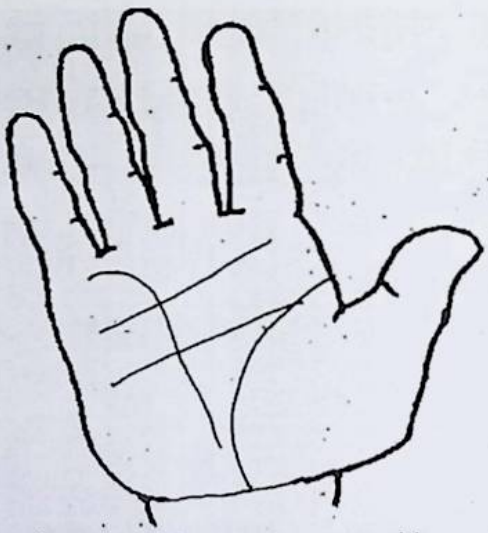

5. मंगल क्षेत्र एवं सूर्य रेखा

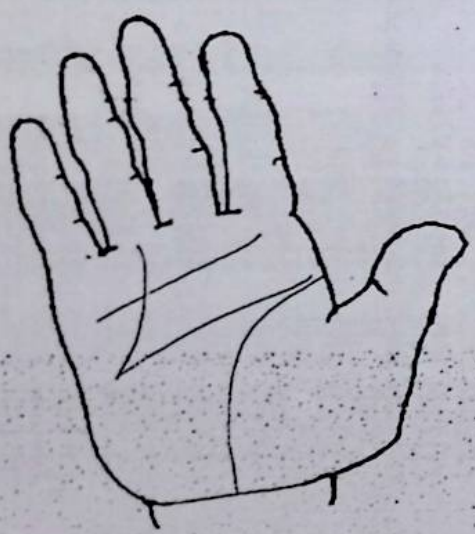

यह क्षेत्र निड़रता साहस तथा शारीरिक बल के लिये उत्तरदायी होने से जातक को बलिष्ट व निड़रता प्रदान करता है परन्तु अनुशासन क्रोध व घमंड़ भी उत्पन्न करता है। जिससे सफलता प्राप्त होने के उपरांत भी जातक सहिष्णु हो आवेश में गलत भी हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. चंद्र क्षेत्र एवं सूर्य रेखा

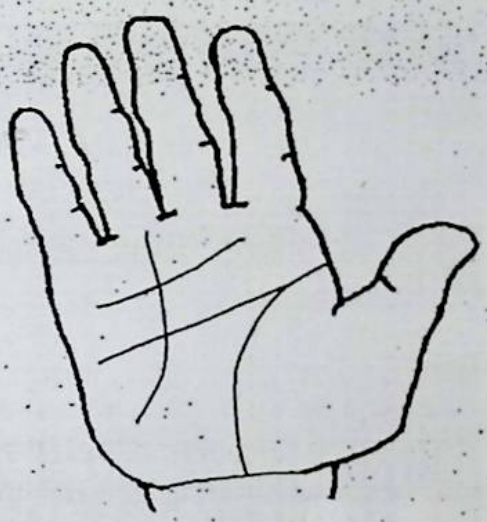

चंद्र क्षेत्र, कल्पना लोक व कला पक्ष का क्षेत्र है। यहां से उत्पन्न या समापन सूर्य रेखा जातक को नये आयाम तथा नवीन भावनाओं को उत्पन्न करती है जिससे जातक में शिष्टता व कठोर भाव में मृदुता भी उत्पन्न हो उत्कृष्ट व्यक्तित्व का विकास होता है। ऐसा जातक एक अच्छा इंजीनियर या कलाकार अथवा समाज में नई विद्याओं का नेतृत्व कर नई दिशा या पथ प्रदर्शक का कार्य करता है।

7. शुक्र क्षेत्र एवं सूर्य रेखा

शुक्र क्षेत्र काम वासना मित्र व शत्रु पक्ष को व्यक्त करता है। यहां से उत्पन्न रेखा जातक को सौंदर्य पक्ष व सहयोगियों या पारिवारिक सम्पदा व भावों में बढ़ोत्तरी तथा सम्पन्नता प्रदान करती है। यह जातक में व्यवहारिक व सम्मोहक शक्ति भी उत्पन्न करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. सूर्य रेखा का स्वरूप व दोष

सूर्य रेखा की बनावट, आकार तथा स्वरूप में दोषों से उत्पन्न कारक व प्रभावों का अध्ययन करेंगे।

1. श्रृंखलाकार सूर्य रेखा

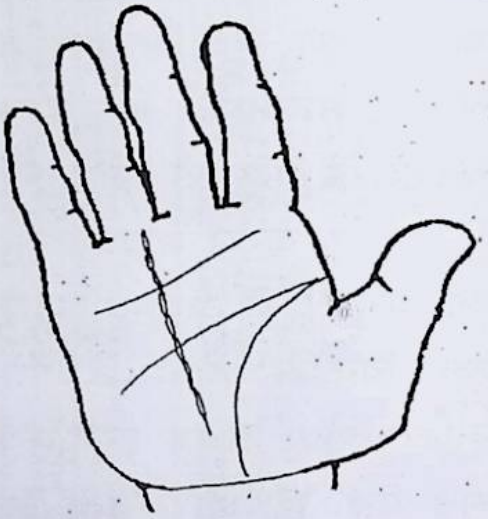

ऐसी रेखा का न होना ज्यादा ठीक है, क्योंकि इस तरह की रेखा सौभाग्य को खत्म करती है तथा अवरोध उत्पन्न करती है। जीवन में परेशानियों व संघर्ष का अम्बार लग जाता है।

2. धुंधली व अस्पष्ट सूर्य रेखा

हाथों में इस तरह की सूर्य रेखा होने पर जातक को परिश्रम व संघर्ष के उपरांत भी यश प्राप्त नहीं होता है। सदैव सुख व दुःख के मिश्रित फल मिलते रहते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. लहरदार सूर्य रेखा

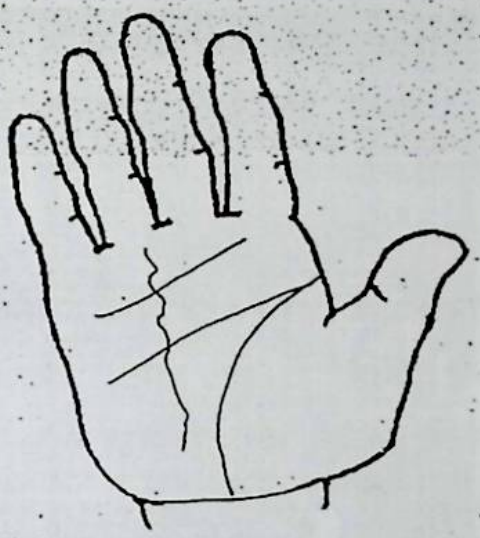

लहरदार सूर्य रेखा जातक की अस्थिर भावों तथा विचलित मन का संकेत है। ऐसा जातक किसी भी कर्म में निरन्तर रहना पसंद नही करता ऐसी रेखा के साथ अंगूठा व मस्तिष्क रेखा सुदृढ़ होने पर विशिष्ट क्षेत्रों में सफलताएं प्राप्त करता है।

4. अनामिका के पर्व तक पहुंचने वाली सूर्य रेखा

अनामिका के पर्व को क्रास कर आगे बढ़ने वाली सूर्य रेखा जातक में अतिवादी प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। ऐसी स्थिति में जातक आत्म केंद्रित होता है। अपनी प्रतिष्ठा के लिये अधिकतर अतिक्रमण करता है।

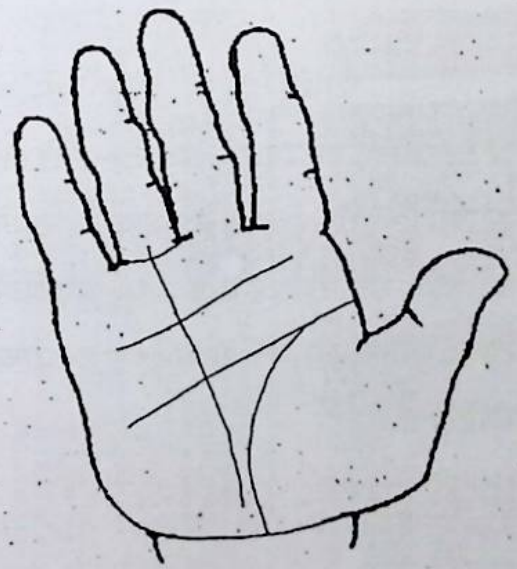

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सूर्य रेखाओं की आड़ी रेखाओं द्वारा काटना

हाथों में उर्ध्व रेखा सदैव सौभाग्यकारी तथा आड़ी रेखाएं सदैव अशुभ प्रभाव उत्पन्न करती है। परन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि आड़ी कटने वाली रेखा की उत्पत्ति किस स्थल से हुई है क्योंकि उस स्थल के गुण या दुगूर्णो का प्रभाव मुख्य काटने वाली रेखा पर अवश्य होता है।

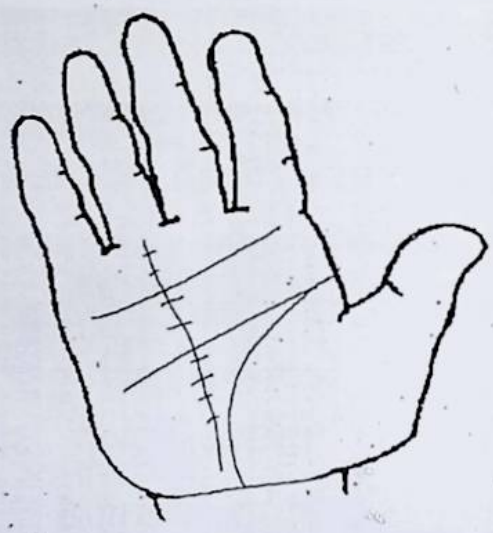

अ. यदि रेखा के प्रारंभ पर आड़ी रेखाएं काटे– ऐसी स्थिति में जातक के सगे संबंधी, उसे हानि पहुंचायेंगे तथा सौभाग्य में अवरोध उत्पन्न करेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. सूर्य पर्वत पर मध्य क्षेत्र में आड़ी रेखाएं हो– तब जातक स्वयं अपने प्रतिस्प्रर्धियों से शत्रुता मोल लेकर अवरोध उत्पन्न करेगा।

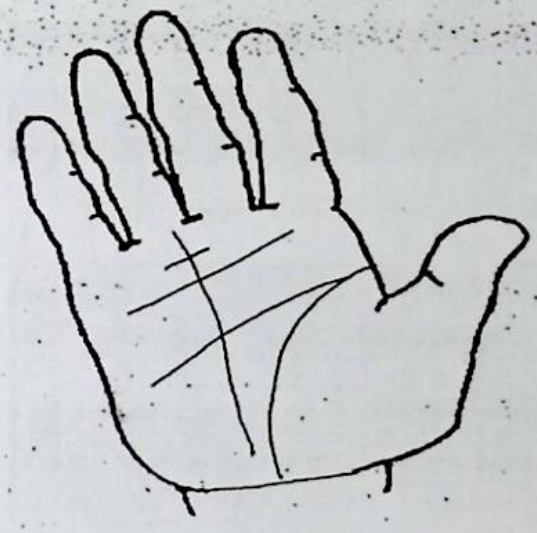

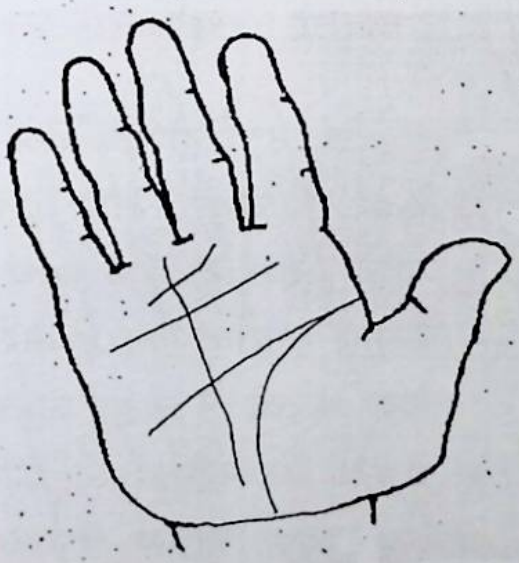

स. यदि शनि क्षेत्र से कोई रेखा निकल कर काटे– ऐसी अवस्था में जातक धन अभाव व आर्थिक समस्याओं के रहते अपनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता तब बदनामी व असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. यदि बुध पर्वत क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर काटे– ऐसी स्थिति में जातक मन मौजी तथा चंचल प्रवृत्ति पर नियंत्रण प्राप्त नही कर पाता तब बदनामी व असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

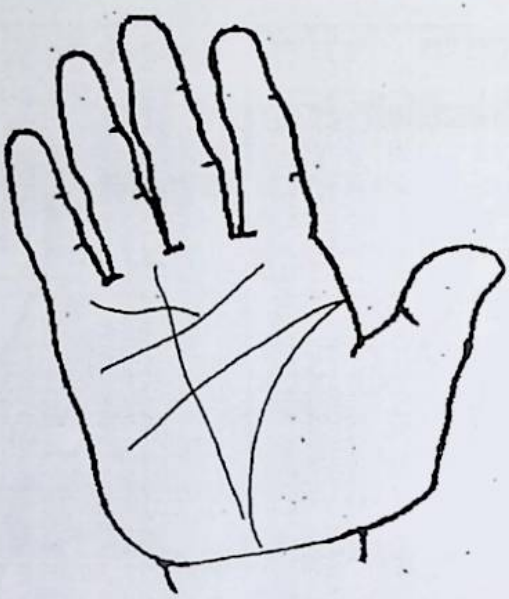

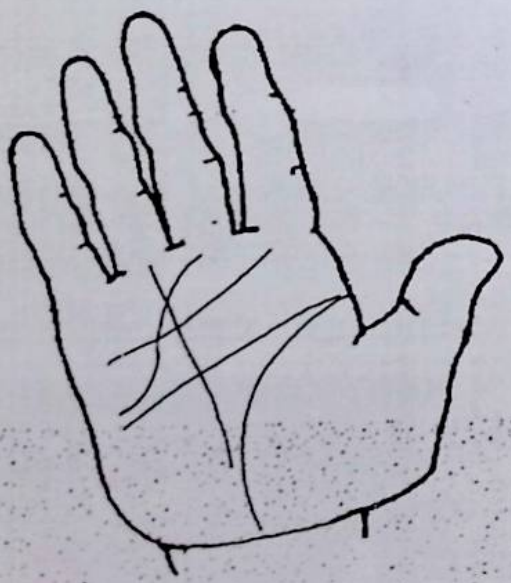

इ. उच्च मंगल क्षेत्र से रेखा काटकर शनि तक पहुंचे– इस क्षेत्र में उत्पन्न रेखाएं जातक का मनोबल कम करती है तथा जातक शत्रुओं से परास्त हो जाता है। जातक जीवन में काफी पिछड़ जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. सूर्य रेखा का टूटना

किसी भी रेखा का टूटना या खंड़ित होना अशुभ फल कारक है। उस अवस्था अथवा समय की गणना के अनुसार जातक के जीवन में बाधाएं उत्पन्न होती है तथा दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है।

अ. सूर्य रेखा मध्य में टूटकर एक दूसरे को ढ़के– ऐसी स्थिति में जातक के जीवन मे बाधा उत्पन्न हो अचानक परिवर्तन होता है तथा यह परिवर्तन सौभाग्यकारी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. सूर्य रेखा हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा के मध्य टूटी हुई हो– दोनो रेखाओं के मध्य में सूर्य रेखा न हों तब जातक के सौभाग्य में मामूली परिवर्तन हो नया क्षेत्र विकसित हो विशिष्ट सफलता प्राप्त होती है।

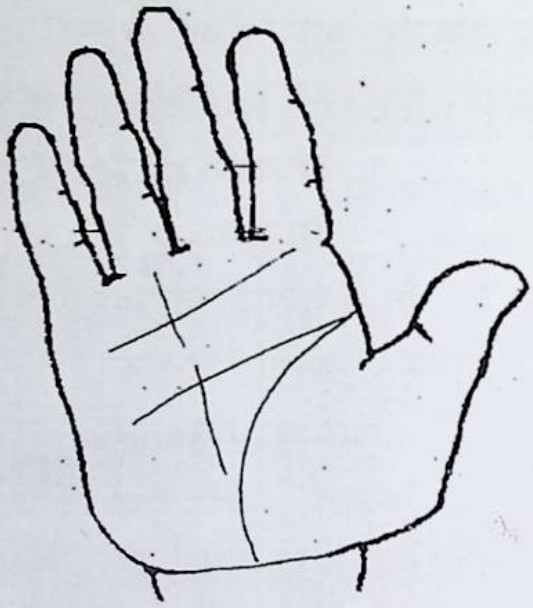

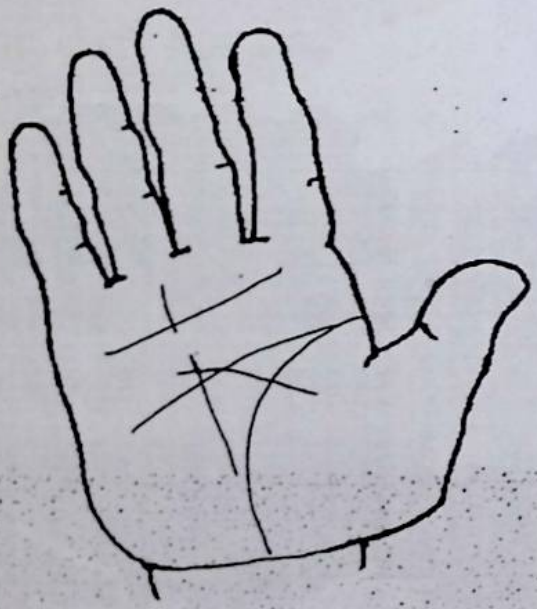

स. हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा के बीच टूटी रेखा व रेखा को शुक्र क्षेत्र की रेखा काटे– ऐसी अवस्था अत्यंत दुःखदायी है। जातक को बाधाएं उत्पन्न होने के बाद असफलताएं घेर लेती है तथा संघर्ष व परेशानियों में जातक का जीवन नष्ट होने लगता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सूर्य रेखा का अन्य मुख्य रेखाओं से संबंध

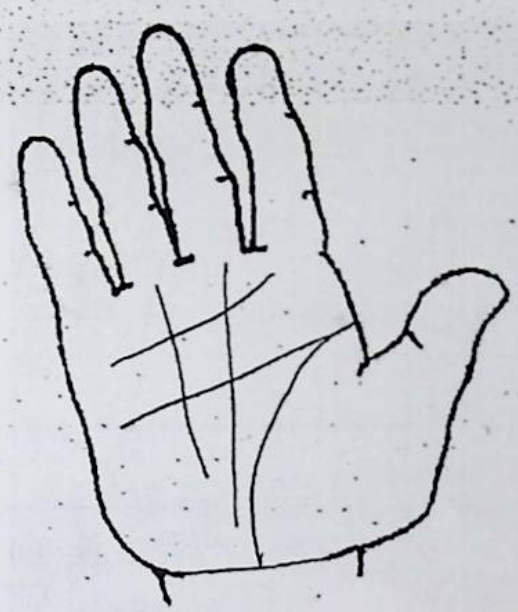

मुख्य रेखाएं, जीवन रेखा, हृदय रेखा तथा मस्तिष्क रेखा प्रायः हाथ में आड़ी अवस्था में रहती है परन्तु भाग्य रेखा व सूर्य रेखा सदैव उर्ध्व अवस्था में रहती है। अतः इनके मुख्य रेखाओं से संबंध प्रायः कम होते है। फिर भी कुछ मुख्य विसंगतियों का अध्ययन हम करते है।

1.सूर्य रेखा तथा जीवन रेखा

प्रायः जीवन रेखा शुक्र पर्वत से निम्न मंगल क्षेत्र तक फैली हुई अवस्था में रहती है अतः जीवन रेखा या शुक्र क्षेत्र से निकली सूर्य रेखा जातक को प्रारंभिक अवस्था में सहयोग तथा सौभाग्यकारी प्रभाव उत्पन्न करती है। बहुत कम स्थिति में अशुभ प्रभाव उत्पन्न करती है।

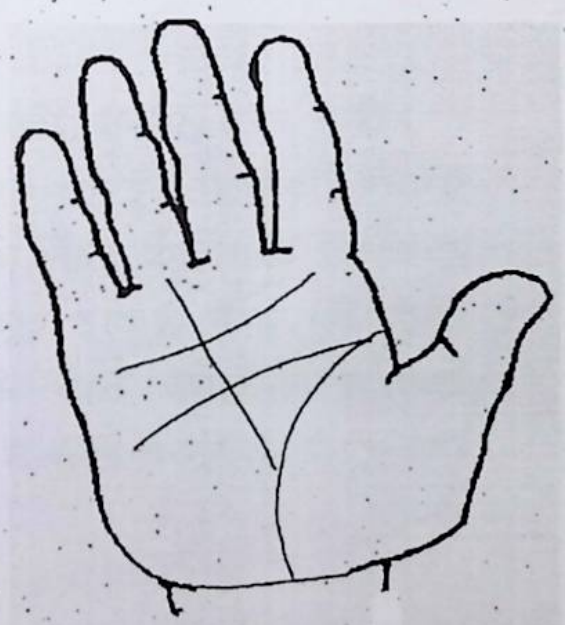

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य रेखा को इस क्षेत्र की प्रभावी रेखा काटें।

2. सूर्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा का संबंध

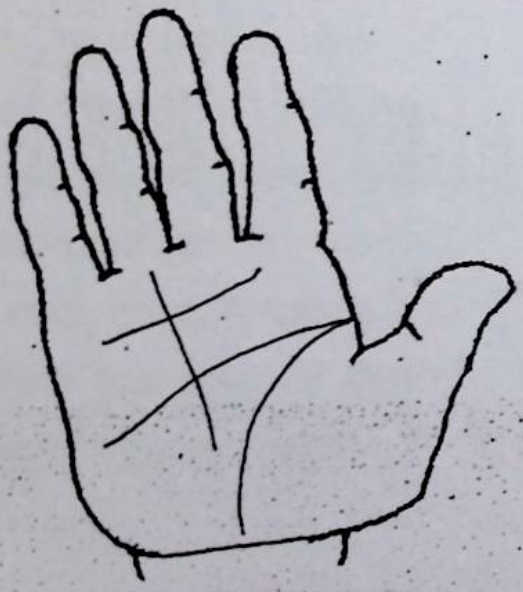

ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार भाग्य रेखा व मस्तिष्क रेखा एक दूसरे के पूरक है। उसी प्रकार सूर्य रेखा व मस्तिष्क रेखा भी एक-दूसरे के पूरक होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

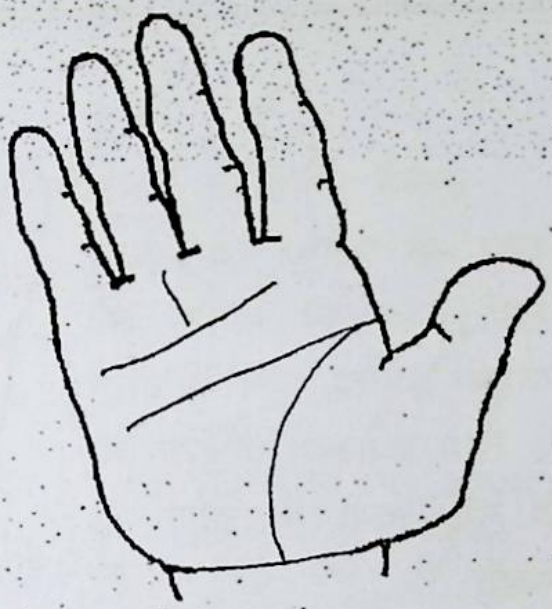

एक रेखा निर्बल हो और दूसरी सबल तब दुर्गूणों को कम कर यथा स्थिति व सौभाग्य ग्रहण करती है।

3. सूर्य रेखा तथा हृदय रेखा का संबंध

हृदय रेखा संवेदना, करूण भाव दया व ममता प्रकट करती है तथा सूर्य रेखा पराक्रम व कठोर अनुशासन इन दोनों रेखाओं का सहयोग जातक में उच्च पद या प्रतिष्ठा के बावजूद विनम्रता व सद्भाव उत्पन्न करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित हृदय रेखा की प्रभाव रेखा द्वारा सूर्य रेखा को काटने पर अशुभ प्रभाव उत्पन्न होता है तथा स्वास्थ्य की खराबी व दुर्घटनाओं के योग भी बनते है।

4. सूर्य रेखा व भाग्य रेखा में संबंध

इस विषय में हमने भाग्य रेखा व सूर्य रेखा में संबंध ज्ञात किया है इसकी पुनरावृत्ति निरर्थक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. सूर्य रेखा तथा प्रभावी रेखाएं

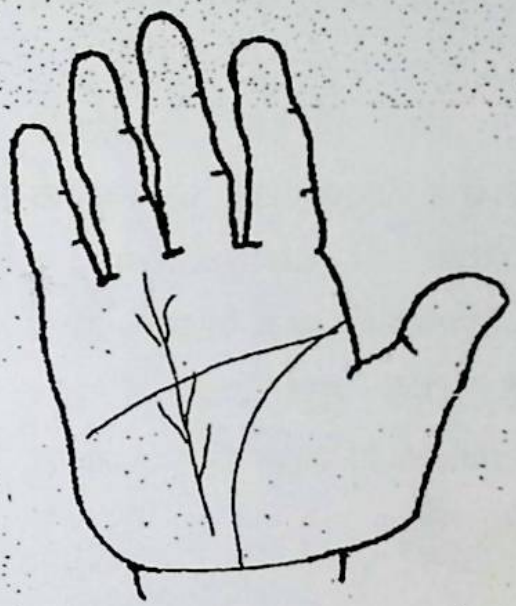

मुख्य रेखाओं पर प्रभावी रेखाएं अन्य रेखाओं या पर्वत क्षेत्रों से निकलकर नये प्रभाव व सौभाग्य व अशुभ प्रभाव उत्पन्न करते है। इनकी विस्तृत जानकारी लेगें।

1. सूर्य रेखा पर उर्ध्व शाखाएं

सूर्य रेखा के दोनों ओर उर्ध्व शाखाएं अत्यंत सौभाग्यकारी होती है तथा जातक को हर क्षेत्र में सफलता प्रदान करती है। यह रेखा सूर्य रेखाओं के गुणों में वृद्धि करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. सूर्य रेखा पर निचे गिरती हुई रेखा

निचे गिरती हुई रेखाएं अशुभ फलकारक जातक के जीवन में असफलताएं व परेशानियों का जन्म होता है। ऐसी सूर्य रेखा में इस रेखा का न होना ज्यादा उचित है।

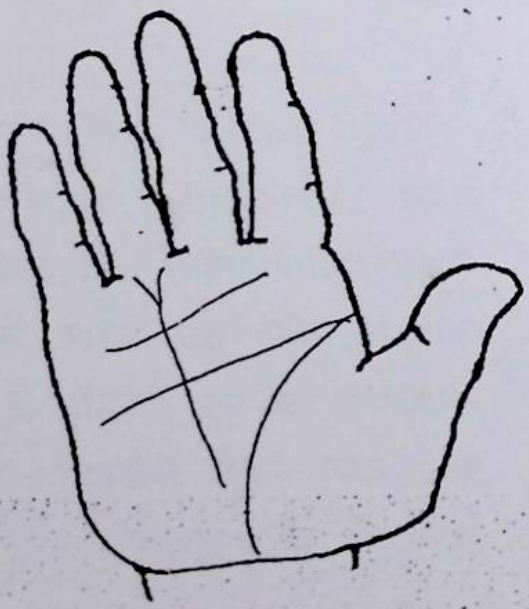

3. सूर्य क्षेत्र पर दो शाखाओं में विभक्त प्रभावी रेखा

सूर्य रेखा के अन्त पर दो प्रभावी रेखाओं में विभक्त होना सौभाग्य कारक व विशिष्ट क्षेत्रों में सफलताएं प्रदान करता है। जातक बहुगुणी होता है और दोनों क्षेत्रों में एकाधिकार कर सफलताएं प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. सूर्य रेखा पर दो शाखाएं विभक्त हो दो पर्वत क्षेत्रों पर पहुंचे

प्रभावी रेखाएं बढ़कर एक ओर बुध क्षेत्र व दूसरी ओर शनि क्षेत्र पर पहुंचने पर जातक में बुद्धि, चातुर्य, संयम व धैर्य का मिश्रण जैसी विशिष्टताएं उत्पन्न होती है और जातक सम्पन्न प्रतिष्ठित व भौतिक सुखों को प्राप्त करता है।

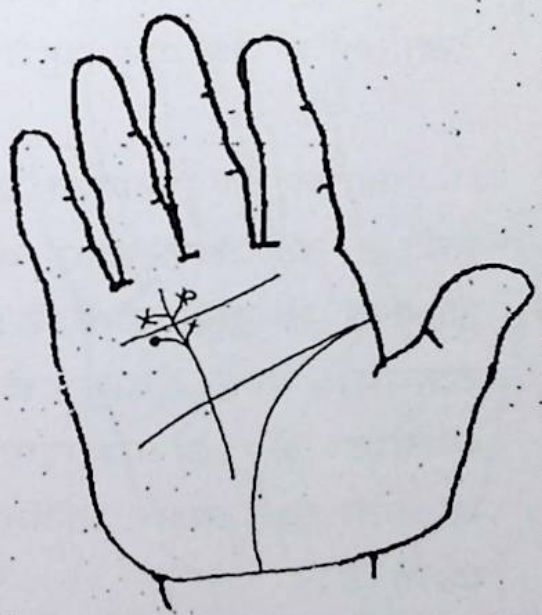

5. सूर्य रेखा और प्रभाव रेखा पर दोष युक्त चिन्ह हो

सूर्य रेखा पर प्रभावी रेखाएं हो व उन पर अशुभ चिन्ह (गुणन, चिन्ह, वृत्त, क्रास) हो तो एकाग्रता में कमी से असफलताओं का अम्बार लग जाता है। जीवन कष्टप्रद हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. सूर्य रेखा से प्रभावी रेखा बुध क्षेत्र पर पहुंचे

जातक में व्यापारिक बुद्धि व अन्वेषण चातुर्य होने से व्यापार में सफलताएं अथवा वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।

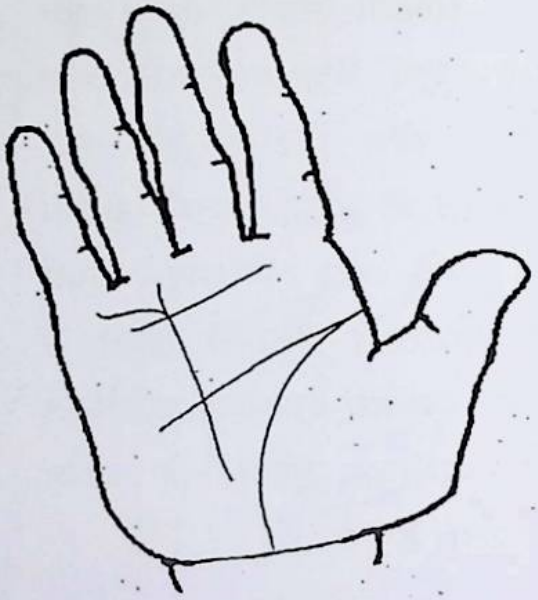

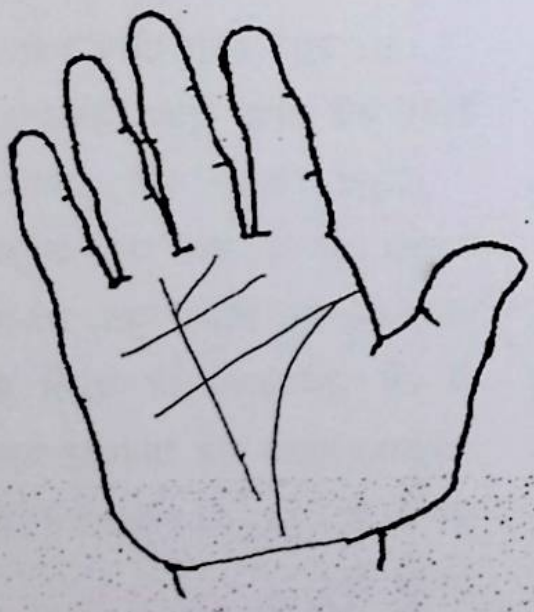

7. सूर्य रेखा से प्रभावी रेखा शनि क्षेत्र पर पहुंचे

जातक को एकाग्रता व धैर्य से बड़ी सफलताएं व सौभाग्य में वृद्धि होती है। रसायन, वस्त्र, धातु के व्यापार में असाधारण सफलता व लाभ अर्जित करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. सूर्य रेखा से प्रभावी शाखा चंद्र क्षेत्र में जावे

चंद्र क्षेत्र में प्रभावी रेखा जातक को कलापक्ष, संगीत तथा विदेश यात्राओं में रूचि उत्पन्न करती है। जातक अच्छा साहित्यकार, संगीतज्ञ, इंजीनियर हो सकता है तथा ऐसे क्षेत्रों में अपूर्व सफलताएं प्राप्त करता है।

९. सूर्य रेखा से प्रभावी शाखा शुक्र क्षेत्र में पहुंचे

जातक रसिक, कलाप्रिय तथा प्रेम अनुरागी होता है व ललित कलाओं में सफलताएं प्राप्त करता है। उसके सहयोगी व मित्रों की तादाद बहुत होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. उच्च मंगल क्षेत्र पर सूर्य रेखा की प्रभावी शाखा

ऐसे जातक निर्भिक, निड़र व स्वतंत्र भाव वाले हो खेलकूद, सेना, पुलिस में उच्च पद पाते है व सम्मानजनक जीवन व्यापन करते है।

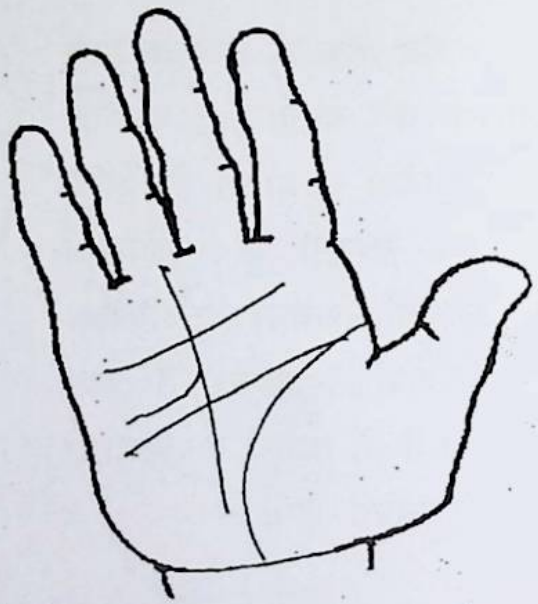

11. भाग्य रेखा से मिली हुई प्रभावी रेखा

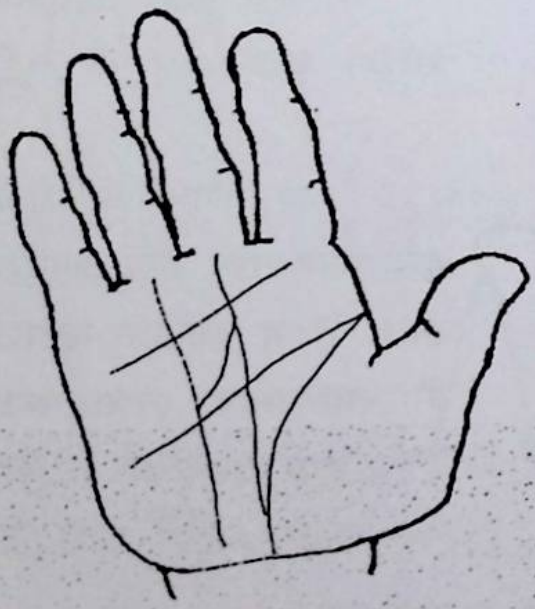

यह अत्यंत सौभाग्य कारक है। ऐसा जातक पराक्रमी तथा सम्मानजनक जीवन व्यापन करने वाला होता है। उसके जीवन मे असफलताएं होती ही नहीं है। उसे हर उपलब्धि बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मस्तिष्क रेखा से मिली हुई प्रभाव रेखा

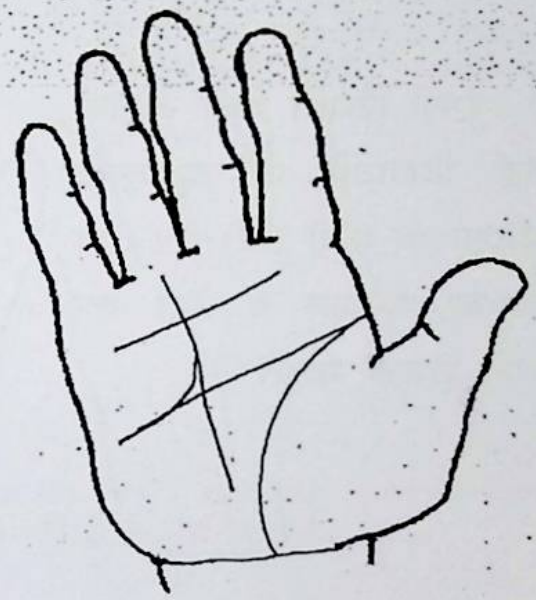

जातक के मानसिक शक्ति मे अपूर्व इजाफा हो जाता है तथा जातक कुशल, वक्ता, बौद्धिक कार्यो में काफी उपलब्धियां प्राप्त करता है। प्रायः जज, नेता अथवा संत इसी श्रेणी में आते है।

13. खंड़ित भाग्य रेखा व पूर्ण सूर्य रेखा

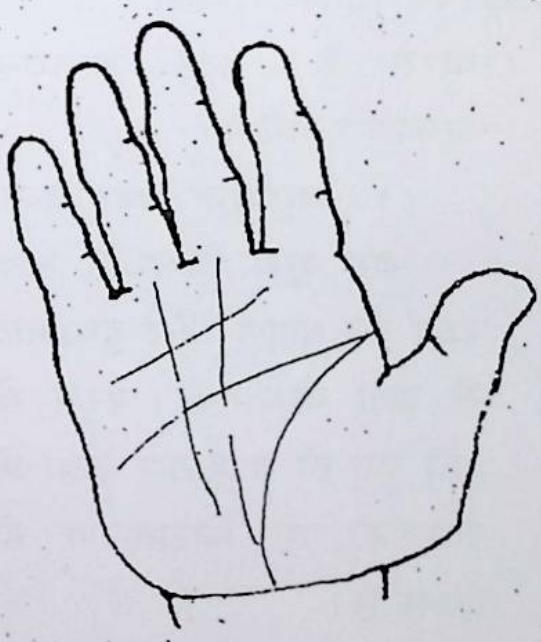

भाग्य रेखा व सूर्य रेखा दोनों ही सौभाग्य के दुष्प्रभाव को नष्ट कर यथा सौभाग्य कायम रखते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14. दोहरी समानान्तर सूर्य रेखा

ऐसी स्थिति वाले जातक कई विद्याओं में बहुमूखी प्रतिभा के धनी होते है। ऐसे जातक समाज व देश का नाम रोशन करते है।

7. सूर्य रेखा व चिन्ह

विभिन्न चिन्ह सूर्य रेखाओं पर विभिन्न प्रभाव उत्पन्न करते है। इन्हें क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे।

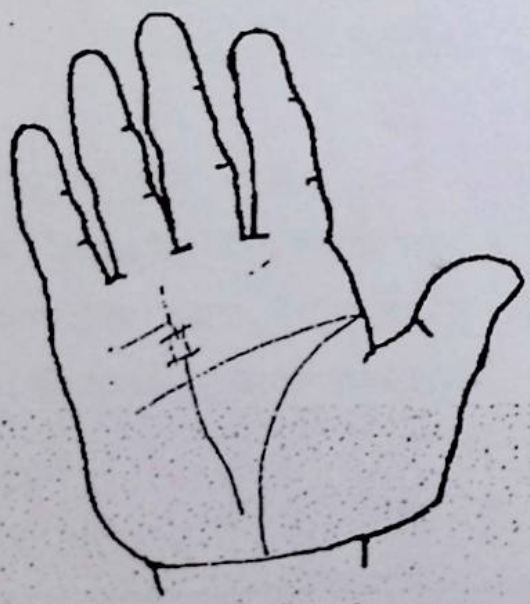

1. चतुर्भूज का चिन्ह

यह शुभ चिन्ह है तथा रेखा पर दुगुर्ण और दुष्प्रभाव से रक्षा करता है। रेखा के अंत पर हो व मुख्य रेखा में दोष हो तो निराकरण हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. रेखा पर त्रिकोण का चिन्ह

प्रायः त्रिकोण का चिन्ह शुभ ही होता है तथा मध्य मे अथवा स्पर्श करता हुआ जातक के मूलगुणों में वृद्धि करता है। सुख व समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

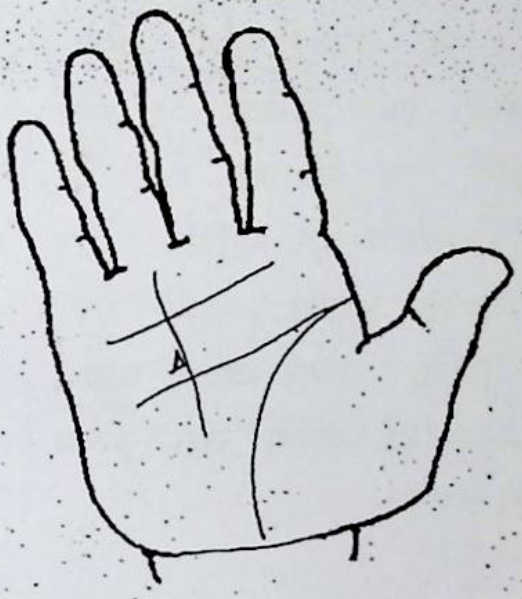

3. सूर्य रेखा के अंत पर गुणन चिन्ह

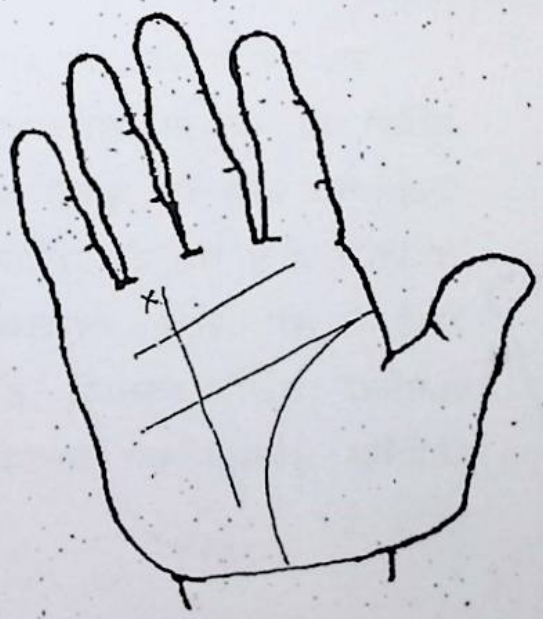

अ. यदि गुणन चिन्ह बुध पर्वत की ओर हो तो जातक में व्यापारिक बुद्धि की कमी से व्यापार में हानि तथा दुष्प्रभाव होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. परन्तु यही गुणन चिन्ह शनि पर्वत की ओर होने पर जातक धर्म में निष्ठावान हो धार्मिक पथ प्रदर्शक अथवा समाज सेवी हो धर्माथ करने वाला, पवित्र भावनाओं वाला संत पुरूष होता है।

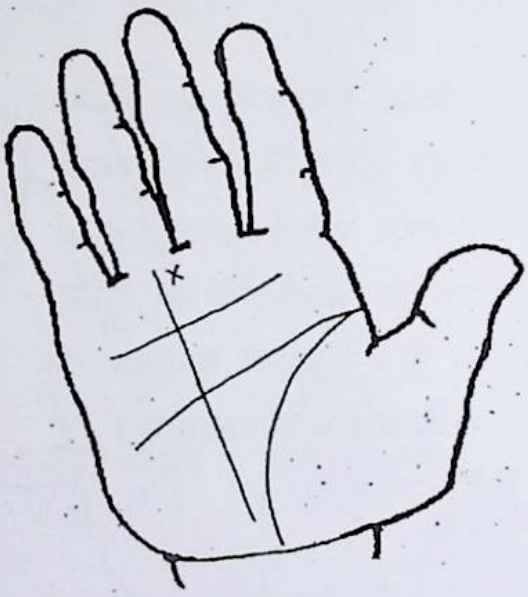

स. जातक का चंद्र क्षेत्र दूषित हो अथवा मस्तिष्क रेखा चंद्र क्षेत्र पर झुकी हो व शनि क्षेत्र पर दो गुणित चिन्ह हो तब जातक धर्मान्ध तथा उन्मादी हो धार्मिक उन्माद का जनक होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. यदि सूर्य रेखा के अंत पर गुणन चिन्ह हो तो अस्थिर भाव वाला गलत निर्णयों से कंलकित होता है तथा अन्तिम समय में उसकी प्रतिष्ठा खत्म हो जाती है।

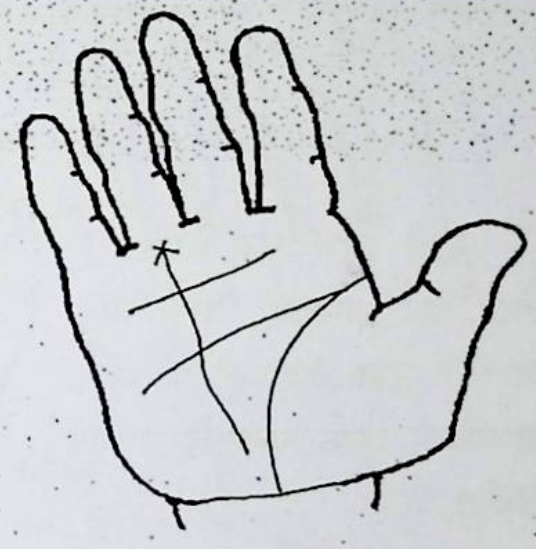

4. सूर्य रेखा व हृदय रेखा के कटान पर बिंदु

हृदय रेखा व सूर्य रेखा आपस में एक–दूसरे को काटे व कटान पर बिन्दु का चिन्ह जातक की नेत्र विकार तथा दृष्टिकोण का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सूर्य रेखा में नक्षत्र चिन्ह

सूर्य रेखा पर प्रारंभ व अंत पर नक्षत्र का चिन्ह अत्यंत शुभ है। यह प्रतिभा, सफलता तथा धन–लाभ का संकेत है।

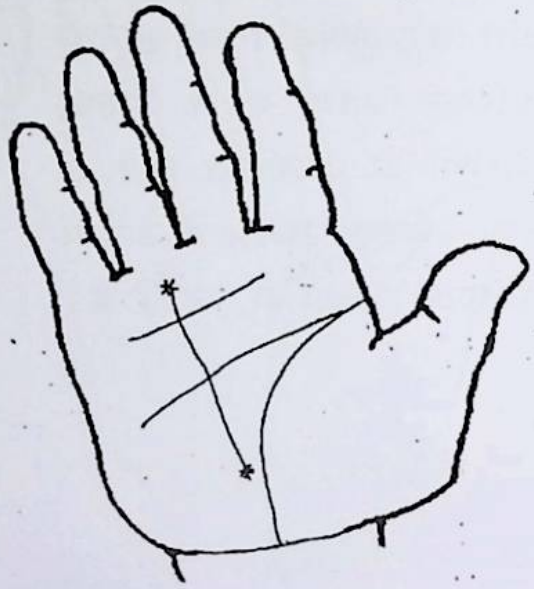

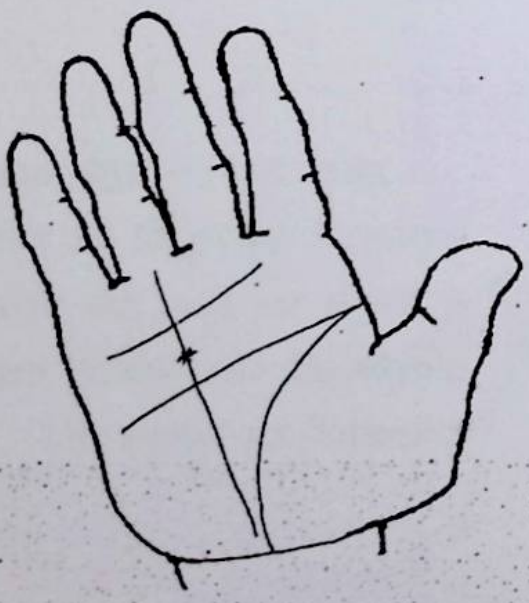

परन्तु दोनों रेखा के मध्य (हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा) यह चिन्ह अशुभ है। ऐसी स्थिति के कारण परेशानियां व विपत्ति लाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य रेखा से निकलने वाली प्रभाव रेखा पर चिन्ह अत्यंत सौभाग्यकारी है। वह उस पर्वत क्षेत्र के गुणों को दुगुना कर देती है।

6. सूर्य रेखा व द्वीप चिन्ह

सूर्य रेखा पर द्विप चिन्ह अत्यंत अशुभ है। इसकी अलग-अलग स्थिति, विभिन्न अशुभता प्रदान करती है परन्तु द्विप चिन्ह की अवधि खत्म होने के बाद पहले वाली सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हो जाती है।

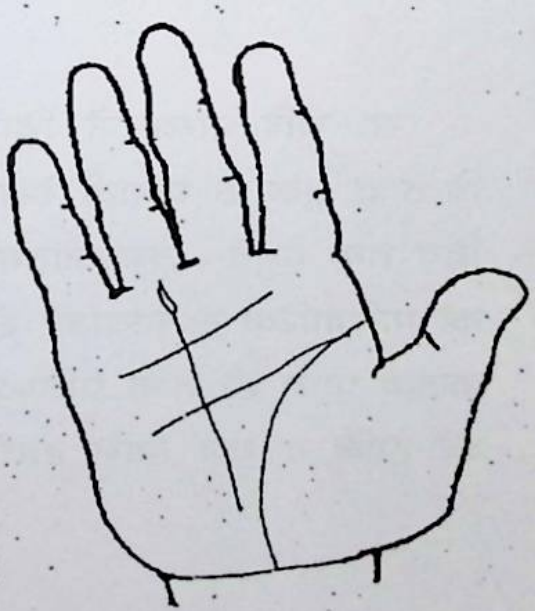

अ. सूर्य रेखा के अन्त पर द्विप चिन्ह-जीवन के अन्तिम समय से संघर्ष व प्रतिष्ठा पर आंच आने पर पूर्ण अंधकारमय हो जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaiapole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh